पढ़ो सोचो और समझो

धर्मवीर जागनी रत्न
श्री जगदीश चन्द्र

श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी, (उ. प्र.)
एवं
श्री निजानन्द आश्रम बड़ोदरा, (गुजरात)

Nijanand App

भूमिका

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छुड़ाइयो छिन।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के
एही जीवन।।

(आज भारत का हर मानव मनुष्य तन लेकर भी अंधकार के गहरे सागर में डूबा पड़ा है। क्योंकि आज हर मनुष्य मायावी सुखों में गर्क हो गया है।) यह वही भारत की देवभूमि है, जहां प्रातः चार बजे से ही लोग अपने परमात्मा की पूजा में लगते थे और उनकी कृपा प्राप्त करते थे। उस समय भारत में छल–कपट और झूठ नहीं था। सत्य की राह पर चलकर त्याग, तपस्या, सहनशीलता और नम्रता के भाव हर एक के अंदर भरे हुए थे। इसलिए भारत भूमि को ही देवभूमि कहा जाता था, जिसके अन्तर्गत बड़े–बड़े देवी–देवता, तीर्थंकर और अवतारों ने भी इसी पवित्र भूमि पर समय–समय पर जन्म लेकर सबको सत्य के मार्ग पर चलने की शक्ति प्रदान की, जिसके फलस्वरुप बड़ी–बड़ी सत्यवती नारियां जिन्होंने अपने पतिव्रता धर्म से प्राकृतिक सूर्य को भी उदय नहीं होने दिया और अपने मुर्दा पति को भी जिंदा कर लिया। सीता जैसी पवित्र देवी ने रावण जैसे पापी के अहंकार को तोड़ा किन्तु, अपने निकट नहीं आने दिया। यह केवल सात्विक भोजन और परमात्मा की भक्ति का बल था। स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात् भारतवर्ष के लोग कुछ और बल प्राप्त करने के बजाय अपने सत्य धर्म और परमात्मा की भक्ति को छोड़कर मांस–मदिरा के सेवन और

Nijanand App

विकारों में पड़कर अपना सर्वस्व नाश कर बैठे। इसके फलस्वरुप आज देवभूमि भी राक्षस भूमि हो गयी है। ऐसे घोर संकट के समय में कलियुग के गुरुजन भी वैसे ही हो गए हैं। गीता के एक बार सुनने से अर्जुन को वैकुण्ठ की प्राप्ति हो गयी क्योंकि उन्होंने गीता के एक–एक वचन को अपने जीवन में उतारा। श्री मद् भागवत् के एक बार सुनने से परीक्षित ने वैकुण्ठ की प्राप्ति की। उस समय धर्म ग्रन्थों का ज्ञान देने वाले गुरुज़न पैसे के लोभ से नहीं बल्कि मानव कल्याण के उद्देश्य से साप्ताहिक पारायण करते थे। आज गली–गली में रामायण, भागवत और गीता के पारायण हो रहे हैं किन्तु सुनाने वालों ने उसे एक धन्धा बना रखा है। वे पहले ही यह तय कर लेते हैं कि इतना पैसा लेंगे। पैसा लेकर सुनाने वाले अपने नए–नए शिष्य बनाकर कृष्ण नाम के मंदिर बनाते हैं। वे शायद भूल में हैं।

जिस पारब्रह्म अक्षरातीत की व्याख्या ग्रन्थों में लिखी है कि वह नाम, तत्व, गुण तथा खट प्रमाणों से रहित है तो कोई राम को सचिच्दानन्द अक्षरातीत तथा कोई कृष्ण को अक्षरातीत बनाकर बिना पद्धति का नया–नया धर्म चला रहा है। और कुछ लोग भगुए वस्त्र धारण कर अपना दर्शनीय रुप बनाकर ठग का भेष बनाए रहते हैं। शायद वह भूल चुके हैं कि "लोभी गुरु, लालची चेला दोनों नरक में ठेलम–ठेला।"

धनी ने अपनी वाणी में कहा है–

"सौ माला वाओ गले में, द्वादस करो दस बेर।
जोलों प्रेम न उपजे पिउ सो, तो लो मन न छोड़े फेर।।"

श्री सुंदरसाथ जी और धर्म प्रेमी सज्जनों! अब हम विचार करें कि हर धर्म– ग्रन्थ में भारत भूमि में कलियुग के उस पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी का आना लिखा है,

जो इस ग्रन्थ में दर्शाया गया है। आप इसे पढ़ कर विचारें और सोचें। जाग्रत बुद्धि के ज्ञान (परा शक्ति) के बिना कोई भी देवी, देवा, तीर्थंकर अवतार, आदि नारायण तथा भक्तजन भी भवसागर से पार नहीं हो सके। उस जागृत बुद्धि के ज्ञान को लेकर स्वयं पारब्रह्म अक्षरातीत ने वि० सं० १७३५ में और कुरान की गणना के अनुसार ११ वीं सदी में प्रकट होकर सब धर्माचार्यों को उनके ही धर्म–ग्रन्थों से अपनी पहचान कराई और उन्होंने बुद्ध निष्कलंक अवतार मानकर चरणों में शीश झुकाया और बुद्ध जी की साका को चालू किया। उधर मुसलमानों के काजी भी कुरान के विरूद्ध नियम बनाकर हिन्दुओं पर नि:संकोच जुल्म ढा रहे थे। उस समय १२ मोमिनों ने श्री प्राणनाथ जी की वाणी से शेखइस्लाम का सिर झुकाया और उसने मान लिया कि इमाम मेंहदी आ गये, आ गये! परन्तु अपने राजबल के अहंकार से उसने इस बात को जाहिर नहीं किया क्योंकि यदि बादशाह औरंगजेब को इस बात का पता चल जाएगा तो वह सारे राजपाट को छोड़कर ईमाम मेंहदी की खिदमत में चला जायेगा। श्री जी साहिब जी ने अनेक राजाओं को समझाया लेकिन छत्रसाल जी के सिवाय अन्य कोई भी नहीं निकला जो श्रीजी के पंचभौतिक तन में विराजमान अक्षरातीत की पहचान करता। श्री प्राणनाथ जी को आखरूल जमां ईमाम मेंहदी और अक्षरातीत के रूप में सिद्ध करने के लिये उन्होंने महोबे के सबसे बड़े काजी अब्दुल रसूल को बुलवाया। कुरान के विषय में प्रश्नोत्तर होने पर उससे एक ही प्रश्न किया कि "दुनिया की पैदाइश कितने तरह की है और आप उसमें से कौन हैं?" काजी प्रश्न का उत्तर

Nijanand App

नहीं दे सका। तब काजी ने कुरान को सिर पर रखकर सिजदा बजाकर यह स्वीकार किया कि श्री जी साहेब जी ही आखरूल जमां ईमाम मेंहदी है। उधर बड़े–बड़े धार्मिक स्थानों से सुन्दर, बल्लभ और बद्री नामक १४ विद्या निपुण विद्वानों से शास्त्रार्थ हुआ। उसमें योगमाया की अखण्ड रास तथा अक्षर–अक्षरातीत के कुछ प्रश्न पूछे गये तो बद्रीदास जी ने लिखकर दे दिया कि ये श्री प्राणनाथ जी ही अक्षरातीत हैं जिनका सम्प्रदाय श्री निजानन्द सम्प्रदाय है, जिसकी पद्धति के प्रमाण माहेश्वर तन्त्र के पृष्ठ संख्या ११३ पर है। इसको शिवजी ने उमा से कहा था। आज कुछ स्वार्थी लोगों ने अपनी मान–मर्यादा और धन बटोरने की दृष्टि से एक नया धर्म बना लिया है और अपने मंत्र में श्री कृष्ण को ही अक्षरातीत कहते हैं। ये लोग पारब्रह्म की वाणी श्री कुलजम स्वरूप को ढांपकर भागवत का प्रचार करके अपने सांसारिक स्वार्थ को पूरा करते हैं और अपने मन्दिरों के नाम परमधाम तथा निजधाम आदि रखकर भोले– भाले सुंदरसाथ को लूटने का साधन बना रखा है। भागवत के रचनाकार व्यास जी को ये लोग ब्रह्ममुनि का पद देकर इस बात का झूठा प्रचार करते हैं कि भागवत ही सबको भव से पार करने वाली है। ऐसा करके ये लोग अपने मान और शान के डंके बजाते हैं तथा श्री कुलजम स्वरूप का नाम बदलकर तारतम सागर रखते हैं और पूजन भागवत का करते हैं। मंदिरों में श्री प्राणनाथ जी की वाणी पधराकर द्वार पर श्री कृष्ण जी की मूर्तियां पधराते हैं। क्या कोई भी धर्म की राह पर चलने वाला साथी है, जो इस झूठ के कचड़े में से बाहर निकलकर श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी की शरण में आये और अपने जीवन को सफल बनाये।

श्री सुंदरसाथ जी ! जब हमारी आत्मा परमधाम में जागृत होगी तो हम श्री राज जी को क्या मुख दिखायेंगे? इस भाव को लेकर कुछ शब्द आपके चरणों में अर्पित कर रहा हूं। मैं समझता हूं कि ये शब्द कुछ कड़वे अवश्य हैं, जो आपको कठिनाई से सहन होंगे किन्तु **श्री जी ने कहा है कि:–**

"आज सांच केहेना, सो तो काहू न रूचे। तो भी कछुक प्रकासूं सत।
सत के साथी को सत के बान चुभसी, दुष्ट दुखासी दुरमत।।"

आपके चरणों में प्रार्थना है कि मेरे इन शब्दों को पढ़े समझें और जीवन में उतारें। अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी और अपने सतगुरू परमहंस महाराज श्री रामरतनदास जी की कृपा दृष्टि से मैंने इस ग्रन्थ को इस रूप में प्रस्तुत किया है। आशा है, आप इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे।

आपकी चरण रज

"धर्मवीर" "जागनी रत्न"

जगदीश चन्द्र

संरक्षक – श्री निजानन्द आश्रम, रतनपुरी, उ० प्र०

एवं

श्री निजानन्द आश्रम, बड़ोदरा,

गुजरात

Nijanand App

माया की प्रबलता

अनादि काल से मायावी सृष्टि के बनने एवं नष्ट होने का प्रवाह चल रहा है। इस सृष्टि में बड़े–बड़े ज्ञानी, तपस्वी एवं वैराग्यवान मानव हो चुके हैं, लेकिन कोई भी माया के बन्धनों से मुक्त नहीं हो सका है। सामान्य जीवों की तो बात ही क्या अक्षर ब्रह्म की पांचों वासनाएं भी कहीं न कहीं माया की लहरों के थपेड़ों में बह ही गयी।

"ए माया छे अति बलवंती, उपनी छे मूल धणी थकी।
मुनिजन ने मनाव्या हार, शिव ब्रह्मादिक न लहे पार।।"
"सुक सनकादिक ने नव टली, लखमी नारायण ने फरी वली।
विष्णु वैकुंठ लीधा मांहें, सागर सिखर न मूक्या क्यांहे।।"

अर्थात् इस माया का बल इतना अधिक है कि बड़े–बड़े मुनियों ने इससे हार मान ली है। यह माया सच्चिदानन्द पारब्रह्म के सत अंग अक्षर ब्रह्म के हुकम से बनी है। ब्रह्मा जी एवं शिव आदि देवता भी इसका पार नहीं पा सके हैं। शुकदेव तथा सनकादिक (सनक, सनन्दन, सनातन, सनतकुमार) जैसे ब्रह्मचारियों एवं योगियों को भी इसने हरा दिया। वैकुण्ठ में स्थित विष्णु भगवान एवं लक्ष्मी जी को भी इसने नहीं छोड़ा। पाताल से लेकर वैकुण्ठ तक के सभी प्राणी इसकी छत्रछाया में ही निवास करते हैं।

भागवत के स्कन्ध ८ अ० १२ में भगवान शिव का विष्णु भगवान की माया द्वारा रची हुई मोहनी स्त्री पर मोहित होने का

वर्णन है। माहेश्वर तन्त्र ५/५६ में शिवजी उमा से कहते हैं–

"अस्मिन्नज्ञान पायोधौ वयं ब्रह्मादयोऽपि च।
बुदबुदा कारतां प्राप्तास्तदिच्छावायुजृम्भिताः।।"

हे पार्वती ! इस अज्ञान के समुद्र में हम और ब्रह्मादिक देवता भी एक बुलबुले के आकार के हैं और पारब्रह्म की इच्छा रूपी वायु से अस्तित्व में बने रहते हैं। भागवत ३/१२/२८–३३ में ब्रह्मा जी का सरस्वती पर मुग्ध होने का वर्णन है तथा स्क० १ अ० १३ में ब्रह्मा जी का माया से मोहित होकर ब्रज लीला के समय ग्वाल बालकों एवं बछड़ों के हरण करने का वर्णन है। महाभारत के शांतिपर्व अ० ३२१ श्लोक ३ में वर्णित है कि शुकदेव जी को साधारण लोगों की भांति आचरण करते और सर्वथा निर्भय फिरते देख वेदव्यास जी ने उन्हें सम्पूर्ण वेदों का अध्ययन कराया और फिर ब्रह्मत्व की प्राप्ति के लिए उपदेश दिया। इसके पश्चात् भी पूर्ण बोध के लिए उन्हें जनक जी के पास जाना पड़ा। भागवत के स्क० ३ अ० १५ में यह वर्णन है कि सनकादिक ने वैकुण्ठ में प्रवेश करते समय रोकने पर जय–विजय नामक द्वारपालों को राक्षस हो जाने का श्राप दे दिया था। (माहेश्वर तन्त्र के तीसरे अध्याय में अखण्ड धाम का ज्ञान प्राप्त करने के लिए लक्ष्मी जी ने ७ कल्पान्त से भी अधिक समय तक तप किया किन्तु कुछ प्राप्ति नहीं हुई।) मा० त० ४/४० में विष्णु भगवान स्पष्ट कहते हैं कि करोड़ो कल्पों में भी ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करना मेरे लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अपार माया के भवसागर से पार करने के लिए स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म इस २८ वें कलियुग में आए हुए हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

Nijanand App

माया की प्रबलता

अनादि काल से मायावी सृष्टि के बनने एवं नष्ट होने का प्रवाह चल रहा है। इस सृष्टि में बड़े–बड़े ज्ञानी, तपस्वी एवं वैराग्यवान मानव हो चुके हैं, लेकिन कोई भी माया के बन्धनों से मुक्त नहीं हो सका है। सामान्य जीवों की तो बात ही क्या अक्षर ब्रह्म की पांचों वासनाएं भी कहीं न कहीं माया की लहरों के थपेड़ों में बह ही गयी।

"ए माया छे अति बलवंती, उपनी छे मूल धणी थकी।
मुनिजन ने मनाव्या हार, शिव ब्रह्मादिक न लहे पार।।"

"सुक सनकादिक ने नव टली, लखमी नारायण ने फरी वली।
विष्णु वैकुंठ लीधा मांहें, सागर सिखर न मूक्या क्यांहे।।"

अर्थात् इस माया का बल इतना अधिक है कि बड़े–बड़े मुनियों ने इससे हार मान ली है। यह माया सच्चिदानन्द पारब्रह्म के सत अंग अक्षर ब्रह्म के हुकम से बनी है। ब्रह्मा जी एवं शिव आदि देवता भी इसका पार नहीं पा सके हैं। शुकदेव तथा सनकादिक (सनक, सनन्दन, सनातन, सनतकुमार) जैसे ब्रह्मचारियों एवं योगियों को भी इसने हरा दिया। वैकुण्ठ में स्थित विष्णु भगवान एवं लक्ष्मी जी को भी इसने नहीं छोड़ा। पाताल से लेकर वैकुण्ठ तक के सभी प्राणी इसकी छत्रछाया में ही निवास करते हैं।

भागवत के स्कन्ध ८ अ० १२ में भगवान शिव का विष्णु भगवान की माया द्वारा रची हुई मोहनी स्त्री पर मोहित होने का

वर्णन है। माहेश्वर तन्त्र ५/५६ में शिवजी उमा से कहते हैं–

"अस्मिन्नज्ञान पायोधौ वयं ब्रह्मादयोऽपि च।
बुदबुदा कारतां प्राप्तास्तदिच्छावायुजृम्भिताः।।"

हे पार्वती ! इस अज्ञान के समुद्र में हम और ब्रह्मादिक देवता भी एक बुलबुले के आकार के हैं और पारब्रह्म की इच्छा रूपी वायु से अस्तित्व में बने रहते हैं। भागवत ३/१२/२८–३३ में ब्रह्मा जी का सरस्वती पर मुग्ध होने का वर्णन है तथा स्क० १ अ० १३ में ब्रह्मा जी का माया से मोहित होकर ब्रज लीला के समय ग्वाल बालकों एवं बछड़ों के हरण करने का वर्णन है। महाभारत के शांतिपर्व अ० ३२१ श्लोक ३ में वर्णित है कि शुकदेव जी को साधारण लोगों की भांति आचरण करते और सर्वथा निर्भय फिरते देख वेदव्यास जी ने उन्हें सम्पूर्ण वेदों का अध्ययन कराया और फिर ब्रह्मत्व की प्राप्ति के लिए उपदेश दिया। इसके पश्चात् भी पूर्ण बोध के लिए उन्हें जनक जी के पास जाना पड़ा। भागवत के स्क० ३ अ० १५ में यह वर्णन है कि सनकादिक ने वैकुण्ठ में प्रवेश करते समय रोकने पर जय–विजय नामक द्वारपालों को राक्षस हो जाने का श्राप दे दिया था। (माहेश्वर तन्त्र के तीसरे अध्याय में अखण्ड धाम का ज्ञान प्राप्त करने के लिए लक्ष्मी जी ने ७ कल्पान्त से भी अधिक समय तक तप किया किन्तु कुछ प्राप्ति नहीं हुई।) मा० त० ४/४० में विष्णु भगवान स्पष्ट कहते हैं कि करोड़ो कल्पों में भी ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करना मेरे लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अपार माया के भवसागर से पार करने के लिए स्वयं अक्षरातीत परब्रह्म इस २८ वें कलियुग में आए हुए हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है –

Nijanand App

आइए ! अब हम विचार करें कि सतयुग त्रेता, द्वापर में जितने भी ग्रन्थ आए और मुहम्मद साहब ने कुरान तथा ईसा, मूसा एवं दाउद ने इंजील, तौरेत तथा जंबूर किताब में यही लिखा है कि २८ वें कलियुग में वह पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वयं आ रहे हैं, वे भारत की पवित्र धरती पर अपनी आत्माओं के साथ अवतरित होकर अपने निजधाम, निजलीला और निज स्वरूप का वर्णन धर्म ग्रन्थों के अनुसार बताएंगे और अब तक के धर्मग्रन्थों के अनसुलझे भेदों और कुरान के हरूफे मुक्तेआत के भी भेदों को खोलेंगे।

अब, जिनको अपने धर्मग्रन्थों पर ही विश्वास नहीं है, बल्कि केवल माया में ही डूबे पड़े हैं और हर पल हर घड़ी धर्मों के अन्दर भी अपनी पूजा-प्रतिष्ठा, मान-गुमान के अहंकार में पड़कर अगुए बने रहते हैं और अपना स्वार्थ पूरा करते हैं। इसका हशर आखिर में क्या होगा, इसे धनी ही जानते हैं। भारत की भूली हुई श्रद्धालु जनता ने अपने गुरुओं एवं अगुओं पर ही अंधविश्वास करके बड़ों के रीति-रिवाज और कर्मकाण्ड को पाल रखा है। ऐसे मौत के फंदे में से वह पारब्रह्म आकर स्वयं निकालेंगे और चौदह लोक निराकार से परे अनादि अक्षरातीत के परमधाम का वर्णन करेंगे। वे अपनी आत्माओं को दुःख का अनुभव कराकर अपनी साहेबी और इश्क का बेवरा करायेंगे और अपने जागृत बुद्धि के ज्ञान से सभी जीवों को निर्मल करके योगमाया के अन्दर ८ बहश्तिों मे अखण्ड कर देंगे । उसके पश्चात् वे अपनी आत्माओं सहित अपने परमधाम जाएंगे। ऐसा धर्मग्रन्थों में कहा गया है –

अब, यदि हम सभी देवताओं, तीर्थंकरों, अवतारों, पैगम्बरों

और त्रिदेवा (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) एवं आदि नारायण को भी देखें तो यह स्पष्ट होता है कि न तो वे इस भवसागर से पार हो सके हैं और न किसी अन्य जीव को पार किया है। क्योंकि ये सभी मिथ्या माया से उत्पन्न हुए हैं। कर्मों के बन्धन में फंसा हुआ मनुष्य माया के फंदे से बाहर नहीं निकल सका है। अब जिन जीवों को पारब्रह्म की कृपा से, जागृत बुद्धि के ज्ञान से सच्चिदानन्द के स्वरूप की पहचान हो गयी। वे सब देवी-देवता, कर्मकाण्ड और बड़ों के रीति-रिवाज को छोड़कर एक धनी की राह पर चल पड़े हैं, वे सहज ही भवसागर से पार हो जायेंगे।

आइए ! श्री सुन्दरसाथ जी एवं धर्मप्रेमी सज्जनों! हम भी आना हीरा जन्म (मानव तन) जो ८४ लाख योनियों के दुःखों को भोगने के पश्चात् प्राप्त हुआ है, उस माया की झूठी शान में न लगाकर श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी के चरणों का आश्रय लेकर उनके ज्ञान से इस भवसागर से पार उतरें। अब इसके आगे सभी शास्त्रों के प्रमाण आपके आगे रख रहा हूं, जिससे आपके संशय मिट जाए और आप अपने जीवन का कल्याण कर सकें।

पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी का प्रकटन–

यद्यपि धर्म-ग्रन्थों के कथनानुसार जीव का ही अवतार होता है, पारब्रह्म का नहीं किन्तु अनहोनी घटना के रूप में अक्षरातीत पारब्रह्म का अपनी आत्माओं के साथ इस नश्वर जगत में आना हुआ जिसके कुछ विशेष कारण हैं।

हद-बेहद से परे उस स्वलीला अद्वैत परमधाम में चिद्घन

Nijanand App

स्वरूप अक्षरातीत (श्री राजजी) एंव उनकी आनन्द स्वरूपा आत्माओं में यह हमेशा से रब्द रहा करता था कि किसका इश्क बड़ा है ? इस रब्द का निर्णय उस पूर्णाति पूर्ण-परमधाम में कदापि सम्भव नहीं था, क्योंकि वहां पर सबका इश्क एक समान है एंव घट बढ़ नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त पारब्रह्म के सत अंग अक्षर ब्रह्म ने भी परमधाम की आनन्दमयी लीला को देखने की चाहना की। अक्षरातीत पारब्रह्म की आत्माओं के अन्दर भी नश्वर जगत की मायावी लीला देखने की इच्छा हो गई। वस्तुतः यह सारी इच्छाएं अक्षरातीत ने ही अक्षर ब्रह्म एंव सखियों के द्वारा उत्पन्न की ताकि इश्क रब्द का निर्णय हो सके। मेरे और अपने स्वरूप की वास्तविक पहचान आत्माओं को हो जाए तथा संसार भी मेरे स्वरूप, धाम एंव लीला को जान जाए और अक्षर ब्रह्म मेरी आनन्दमयी लीला का रसपान कर सके। इस प्रसंग का विस्तृत वर्णन श्री मुखवाणी में वर्णित है एवं पुराण संहिता के अध्याय २२,२३ एवं२४ वें में वर्णित है।

सर्वप्रथम अक्षरातीत ने अपनी आत्माओं के साथ ब्रज में आकर ११ वर्ष ५२ दिन तक लीला की। तत्पश्चात् योगमाया में जाकर उन्होंने अखण्ड रास की एक रात की लीला की। ब्रज लीला में धनी ने सखियों को माया में भुलाया तथा रास के अन्दर अक्षर ब्रह्म की आत्मा में अपने जोश शक्ति रखकर परमधाम की लीला नाटक के रूप में दिखाई। लेकिन इन दोनों लीलाओं में सखियों की माया देखने की इच्छा पूरी न हो सकी तथा अक्षरब्रह्म परमधाम की वाहेदत की लीला के रहस्य को नहीं जान सके। इसलिए पुनः इस नए जागनी के ब्रह्माण्ड में स्वयं अक्षरातीत को अपनी आत्माओं के साथ आना पड़ा।

कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर।
खेल देखन के कारने, आइयां उमेदां कर।।

तब तीसरो रच के खेल, स्यामा जी आए इत।
तब हम भी आइयां तित, स्यामा जी खेले जित।।

स्यामाजी को धनिऐं, आवेस अपनो दियो।
सब केहे के हकीकत, हुकम ऐसो कियो।।

प्रकास हिन्दुस्तानी १/१,३,४

(आनन्दरूपो याः सख्यो ब्रजे वृन्दावने स्थिताः।
कलौ प्रादुर्भविष्यन्ति पुनर्यास्यन्ति तत्पदम्।।

चिदावेशवती बुद्धिरक्षरस्य महात्मनः।
प्रबोधाय प्रियाणां च कृष्णस्य परमात्मनः।।

मुक्तिदा सर्वलोकानां भविता भारताजिरे।
प्रसरिष्यति हृद्देशे स्वामिन्याः प्रभुणेरिता।।

एंव सम्प्राप्तविज्ञाना विनिद्रा ब्रह्मणः प्रियाः।
प्राप्स्यन्ति परमानन्दं परिपूर्ण मनोरथाः।।

बृहत्सदाशिव संहिता अन्तगर्त श्रुतिरहस्यम्।
श्लोक १७-२०)

अर्थात् परमधाम की जिन आनन्द स्वरूपा आत्माओं ने ब्रज और नित्य वृन्दावन में पारब्रह्म के साथ लीला की थी, वे अपनी इच्छा के पूर्ण न होने से कलियुग में पुनः प्रगट होगी और उसके

Nijanand App

पश्चात् जाग्रत होकर अपने निजधाम में चली जाएगी। अक्षरातीत की प्रियाओं को जाग्रत करने के लिए पारब्रह्म के आवेश से युक्त अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि भारतवर्ष में श्री श्यामा जी (सद्गुरू धनी श्री देवचन्द्र जी) के हृदय में प्रगट होगी और सभी प्राणियों को अखण्ड मुक्ति देने वाली होगी तथा उन्हीं के द्वारा चारों ओर फैलेगी।

इस प्रकार, फरामोशी में डूबी हुई पारब्रह्म की आत्मायें जागृत ज्ञान को प्राप्त करके और अपनी सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करके परम आनन्द को प्राप्त करेंगी।

इस २८वें कलियुग में पारब्रह्म के आने के कारण ही इसे धन्य–धन्य कहा गया है –

कलिर्धन्यः कलिर्धन्यः कलिर्धन्यो महेश्वरः।
यत्र कृष्ण प्रियाणां च वासनाः समुपाविशन्।।
पुराण संहिता ३२/१

वेद व्यास जी कहते हैं कि हे शिवजी ! यह कलियुग धन्य है, धन्य है, धन्य है क्योंकि इसके अन्दर अक्षरातीत पारब्रह्म की आत्माओं का अवतरण होना है।

अक्षरातीत पारब्रह्म अपनी आत्माओं से कभी भी अलग नहीं हो सकते अतः आत्माओं के साथ पारब्रह्म का अवतरण होना। इस कलियुग में अवश्य सिद्ध होता है। पुराण संहिता ३१/५० में यह बात स्पष्ट रूप से कही गई है।

अगाधाज्ञान जलधौ पतितासु प्रियासु च।
स्वयं कृपामहाम्भोधौ ममज्ज पुरूषोत्तमः।।

अर्थात् अज्ञान के अगाध सागर में फंसी हुई प्रियाओं को स्वयं अक्षरातीत अपनी कृपा के महासागर में डालकर स्नान कराएंगे।

पारब्रह्म अपनी निजबुद्धि के ज्ञान को लाएंगे जिससे परमधाम की आत्माएं माया–ब्रह्म का भेद समझेंगी एवं माया को पीठ देकर अपने घर जाएंगी। अक्षर ब्रह्म की जागृत बुद्धि से सभी जाग्रत होंगे।

इसी प्रकार, माहेश्वर तंत्र के अन्तर्गत भी पारब्रह्म के स्वंय आकर प्रबोधित करने का वर्णन है –

आविर्भावाच्च लीलायाः द्वापरान्ते कलौ युगे।
असहिष्णुज स्वप्रियाणां दुःखलीलानुदर्शनम्।।
तासामेकां च परमां सुभगां सुन्दरीं प्रियां।
प्रबोध्धयिष्यतितरां कथयित्वां विनिर्णयम्।।
माहेश्वर तन्त्र २२ /२६, २७

द्वापर के अन्त होने पर कलियुग में लीला के प्रगट होने से अपनी प्रियाओं की दुःखपूर्ण लीला को न सहते हुए पारब्रह्म उनमें से एक परम सौभाग्य शालिनी सुन्दरी (श्यामा जी) नाम की प्रिया को निर्णय (जाग्रत ज्ञान) बतलाकर प्रबोधित करेंगे।

भविष्योत्तर पुराण में तो पारब्रह्म के प्रकटीकरण का समय भी स्पष्ट रूप से दिया गया है–

Nijanand App

(महीतले च म्लेच्छानां राज्यसवंशः प्रवर्तते।
परस्परं विरोधे च अवरङगख्यो भवेद्यदा।।
विक्रमस्य गतेऽब्दे सप्तदशाष्टत्रिकंयदा।
तदायं सच्चिदानन्दोऽक्षरात्परतः परः।।
भारते चेन्दिरायां स बुद्धः आविर्भविष्यति।
स बुद्ध कल्कि रूपेण क्षात्र धर्मेण तत्परः।।
चित्रकूटे वने रम्ये सः वै तत्र भविष्यति।
वर्णाश्रमाणां धर्मस्य स्थापनं वै करिष्यति।।
भविष्योत्तर पुराण उ० ख० अ० ७२)

(ब्रह्म प्र०) ब्रह्मा जी कहते हैं कि हे नारद ! जब पृथ्वी पर मुसलमानों के राज्य का विस्तार हो जाएगा तथा हिन्दू और मुसलमान परस्पर विरोधी हो जाएंगे और औरंगजेब का राज्य भारतवर्ष में होगा तब विक्रम सम्वत् १७३८ होगा। उस समय अक्षर ब्रह्म की शक्ति भारत में श्री इन्द्रावती जी के अन्दर बुद्ध निष्कलंक अवतार के रूप में निजबुद्धि के ज्ञान के साथ भी अवतरित होगी। वह निष्कलंक बुद्ध जी क्षत्रिय धर्म से युक्त होकर चित्रकूट के सुन्दर प्रदेश (श्री पन्ना जी) में प्रगट होंगें। वे वर्णाश्रम धर्म की रक्षा करेंगे।

बुद्ध गीता एंव बुद्ध स्तोत्र में तो स्पष्ट रूप से कलियुग में प्रगट होने वाले श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार को पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द ही कहा गया है –

तस्याश्चातीतमतद्धि अक्षरे यत्पुरा स्मृतम।
तस्माच्चैवाक्षरात्पुत्र अतीतो बुद्ध एंव हि।।
बुद्ध गीता श्लोक ९

ब्रह्मा जी नारद जी से कहते है– हे पुत्र ! यह अक्षर ब्रह्म उस मोह रूपी नींद से परे हैं। इस कथन का वर्णन पहले किया जा चुका है । हे पुत्र ! किन्तु बुद्ध जी तो उस अक्षरब्रह्म से भी परे हैं। (अक्षरातीत के प्रगटन का ही धर्म–ग्रन्थों में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के रूप में वर्णन किया गया है)

अक्षरातीत एषो वै पुरूषो बुद्ध उच्यते।
तेजोमयश्चादिरूपस्तस्यावतार उच्यते।।
बुद्ध गीता श्लोक १७

यह श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी (श्री प्राणनाथ जी) ही अक्षरातीत पुरूष कहे जाते हैं। ये अत्यन्त तेजोमय हैं तथा मूलस्वरूप पारब्रह्म के निज स्वरूप कहे जाते हैं।

(प्रासादपतनं चैव तीर्थानां च यदाप्युत।
तदा बुद्धों भविष्येत हीति मे निश्चया मतिः।।
बुद्ध गीता श्लोक ३४)

जब यवनो के द्वारा (मुसलमानों के द्वारा) मंदिरों को गिराया जाने लगेगा तथा तीर्थों की महिमा भी कम होती जाएगी, तब श्री बुद्ध जी का प्रगटन होगा, ऐसी मेरी निश्चित रूप से धारणा है।

Nijanand App

तदारूढ़ो स्वंय विश्वस्रग्बुद्धो विराजित:।
विश्वे विश्व स्वरूपोऽसौ पुरूष: परमेश्वर:।।

बुद्ध गीता श्लोक ६१

अपने आदेश से सम्पूर्ण विश्व को बनवाने वाले श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी अक्षर ब्रह्म की जाग्रत बुद्धि रूपी घोड़े पर विराजमान होंगे। इस विश्व में एकमात्र वे ही सभी प्राणियों के आधार स्वरूप एवं पारब्रह्म रूप पुरुष होंगे।

कलेरादौ समुत्पन्नं भविष्यति परं मह:।
सहसा ज्ञान रूपेण ज्ञानरूपा: स्वयं भव।।

बुद्ध स्तोत्र श्लोक ५

शिवजी कहते हैं– हे उमा ! कलियुग के प्रथम चरण में वह सच्चिदानन्द पारब्रह्म अचानक ज्ञानस्वरूप में प्रगट होंगे, जिनके ज्ञान को प्राप्त करके तुम स्वयं भी ज्ञानमयी हो जाना।

श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार श्री प्राणनाथ जी कुछ समय तक गुप्त रूप से पृथ्वी पर विचरण करेंगे। वे स्वयं ही परमधाम के ज्ञानमयी स्वरूप होंगे तथा सबको उसका साक्षात्कार कराने वाले होंगे। मेरे इस कथन में कोई भी संशय नहीं है।

एतद् बुद्धस्य सद्रूपं तवाग्रे गदितं मया।
चिन्तनीय प्रयत्नेन स्मरणीयं परात्परम्।।

बुद्ध स्तोत्र श्लोक १८

हे पार्वती ! श्री विजयाभिनन्द बुद्ध जी का वास्तविक स्वरूप

मैंने तुम्हारे सामने वर्णन कर दिया है। सबसे परे रहने वाले उस पारब्रह्म के स्वरूप विजयाभिनन्द बुद्ध जी (श्री प्राणनाथ जी) यत्नपूर्वक तुम्हारे द्वारा हमेशा चिन्तन एंव स्मरण करने योग्य है।

शालिवाहन शाकात् तु गत षोऽशकं शतम्।
जीवोद्धाराय ब्रह्माण्डे कल्कि प्रादुर्भविष्यति।।

भविष्य दीपिका अ० ३

अर्थात् शालिवाहन साका के १६०० वर्ष व्यतीत हो जाने के पश्चात् सम्पूर्ण जीव सृष्टि के उद्धार के लिए इस ब्रह्माण्ड में निष्कलंक बुद्धावतार श्री प्राणनाथ जी का प्रगटन होगा।

भागवतादि कुछ ग्रन्थों के आधार पर लोग यह अनुमानत: कहा करते हैं कि अभी तो कलियुग का प्रथम ही चरण चल रहा है। जबकि निष्कलंक बुद्धावतार तो कलियुग के अन्तिम चरण में होना है। उनका कथन भ्रान्ति से ग्रसित है। वस्तुत: कलियुग की उम्र पापों के कारण नष्ट हो जाती है। इस सम्बन्ध में देखिए बुद्धगीता का यह कथन–

त्रेता वै त्रिगुणायुषं भुनक्ति। द्वापरो द्विगुणं।
चायुषं भुक्त्वा तिष्ठेत। सत्यं सत्येनाधितिष्ठति।।
कलिश्चाय क्षीयेत। तंद्वतु प्रायश्चित्तत्वात्।
प्रागगदित्वात्सहस्रांश: क्षीयेत सहस्रांशस्तिष्ठति वा नवा।।

अर्थात् त्रेता युग अपनी सम्पूर्ण आयु (कलियुग की तिगुनी) का भोग करता है। द्वापर भी अपनी सम्पूर्ण आयु (कलियुग की दुगनी)

Nijanand App

को भोगकर स्थित रहता है। सत्ययुग एकमात्रच सत्य के आधार में ही स्थित रहता है, किन्तु यह कलियुग नष्ट होता रहता है। इस प्रकार, पापों के प्रायश्चित स्वरूप पूर्व कथनानुसार या तो इसका हजारवां भाग नष्ट हो सकता है या सम्पूर्ण भाग नष्ट होकर केवल हजारवां भाग ही बचा रह सकता है या वह भी नहीं रह सकता है।

सत्ययुग में धर्म अपने चारों चरणों पर स्थित रहता है इसलिए वह कलियुग की चार गुनी उम्र (४३२०००x४=१७२८००० वर्ष) का भोग करता है। त्रेता में धर्म तीन चरणों पर स्थित रहता है इसलिए उसकी उम्र १२८६००० वर्ष होती है। द्वापर में धर्म दो चरणों पर स्थित होता है, इसलिए उसकी उम्र ८६४००० वर्ष होती है। कलियुग में धर्म का केवल एक ही चरण स्थित होता है। अतः पापों के कारण कलियुग अपनी सम्पूर्ण आयु ४३२००० वर्ष को भोग नहीं पाता है। पापों के कारण उसकी आयु क्षीण हो जाती है।

सास्त्रे आवरदा कही कलजुग की,
चार लाख बत्तीस हजार।

काटे दिन पापें लिख्या माहें सास्त्रों,
सो पाइए अर्थ अंदर के विचार।।

सोलै सै लगे रे साका सालवाहन का,संवत सत्रह सै पैंतीस।
बैठाने साका विजिया अभिनन्द का,यों कहे सास्त्र और जोतिस।।

किरंतन ५८/१६,१८

रूद्रयामल तन्त्र के कथनानुसार कलियुग की उम्र पापों के कारण, सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण के हिसाब से कट जाती है। एक

ग्रहण के लगने से १२५ वर्ष कम हो जाते हैं। सम्पूर्ण कलियुग में ३४१२ ग्रहण लगने हैं। इसलिए ३४१२x१२५ =४२६५००।
४३२०००–४२६५००=५५०० वर्ष

इस प्रकार, कलियुग की उम्र में केवल ५५०० वर्ष ही शेष बचते हैं।

कबीर जी ने भी इसी प्रकार की बात कही है –

बावन वीर कबीर कहांऊ, भवसागर के जीव छुड़ांऊ।
बरस पांच हजार सौ पांचा, तब्र यह सब्द होएगा सांचा।।
ग्रहण लगे चौंतीस सौ बारा, कलियुग लेखा होई निखारा।
वाकी बचे रसातल जाई, सत्य नाम रहे निज ठहराई।
सवा सौ बरस ग्रहण निरधारा, आगम सत्य कबीर पुकारा।।

पुराण संहिता के अंदर भी कलियुग के प्रारम्भिक चरण में ही पारब्रह्म का अपनी आत्माओं के साथ प्रगट होना लिखा है–

स्वारोचिषदिषु मनुष्वतीतेषु च षटसु च।
वैवस्वतस्य च मनोरन्तरे सप्तमे तथा।।
अष्टाविंशतिमे तस्य कलौ तच्चरणादिमे।
मनोरथावशेषस्य भोगमाप्स्यन्ति दुःसहम्।।

पुराण संहिता ३१/३२,३३

स्वारोचिष आदि ६ मन्वन्तरां के बीत जाने पर सातवें वैवस्वत मनु के अन्तर्गत २८ वें कलियुग के प्रथम चरण में खेल देखने की इच्छा के शेष रह जाने के कारण अक्षरातीत पारब्रह्म की आत्माएं

Nijanand App

असहनीय दुःख का अनुभव करेंगी।

अभाविनो भविष्यन्ति मुनयो ये ब्रह्मरूपिण:
उत्पन्ना: ये कलौयुगे प्रधानपुयषाश्रया:।
कथायोगेन तान् सर्वान् पुजयिष्यन्ति मानवा:
यस्य पुजा प्रभावेण जीव सृष्टि: समुद्धर:।।
हरिवंश पुराण भविष्य पर्व अ० ४

अर्थात कलियुग में कभी भी न प्रगट होने वाले वे ब्रह्मस्वरूप मुनि प्रगट होंगे, जो प्रधान पुरुष अक्षरातीत के आश्रय में ही रहेंगे। उनके द्वारा ब्रह्मज्ञान रूपी कथायोग का श्रवण करके सभी मनुष्य उनकी पूजा करेंगे। उस पूजा के प्रभाव से सम्पूर्ण जीवसृष्टि का उद्धार होगा।

कुछ लोगों ने गौतम बुद्ध को ही बुद्धावतार कहने की भूल की है। ब्रह्म कहां है, कैसा है और क्या करता है? इन प्रश्नों का उत्तर बौद्ध मत में नहीं है। शून्यवाद और क्षणिकवाद का सिद्धान्त आत्मा और परब्रह्म पर लागू नहीं होता इसलिए गौतम बुद्ध को बुद्धावतार कहना सत्य के साथ खिलवाड़ करना ही है। वस्तुत: धर्मग्रन्थों में कलियुग में पारब्रह्म के जाग्रत बुद्धि के अवतार को बुद्धावतार कहते हैं। कल्कि अवतार का सम्बन्ध उस दूसरे तन से सम्बन्धित है, जिसमें पूर्वोक्त बुद्धि भी विराजमान हो एंव जिसके कार्य में किसी भी प्रकार की कमी न हो। धर्मग्रन्थों में इन्हें यद्यपि अलग-अलग अवतार माना गया है। किन्तु तारतम ज्ञान की दृष्टि से देखने पर सारे रहस्य का स्पष्टीकरण हो जाता है। बुद्धावतार जहां सद्गुरु

धनी श्री देवचन्द्र जी के लिए प्रयुक्त किया जाता है, वहीं निष्कलंक (कल्कि) अवतार श्री प्राणनाथ जी के लिए माना जाता है। वह अवतार केवल जाग्रत बुद्धि का ही होता है, पारब्रह्म का नहीं किंतु पारब्रह्म के साथ जाग्रत बुद्धि के जुड़े रहने के कारण उन्हें भी बुद्धावतार कहा गया है। लीला की पूर्णता दूसरे स्वरूप में हुई इसलिए श्री प्राणनाथ जी को 'श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार' कहते हैं। इन्हीं को श्री जी साहेब भी कहते हैं। पुराण संहिता ३४/४३ में दो तनों में लीला के होने का वर्णन है -

साहारयमिन्दिरायाश्च लब्धवा कार्य करिष्यति।

अर्थात् श्यामा जी श्री इन्द्रावती की सहायता से जागनी कार्य करेंगी। इसका संकेत इस बात की तरफ है कि श्री श्यामा जी दो तनों में विराजमान होकर लीला करेगी। दूसरा तन श्री इन्द्रावती जी का होगा।

दोनों तनों में पारब्रह्म विरजमान रहेंगे। इस प्रकार, पहले तन को बुद्धावतार और दूसरे तन को निष्कलंक अवतार कहा जाएगा। दूसरे तन को ही सारी शोभा मिलनी है। इस प्रकार, धर्म ग्रन्थों में जहां भी 'बुद्धावतार' या 'कल्कि' के आने का वर्णन है, वहां पर श्री प्राणनाथ जी का ही प्रगटन समझना चाहिए।

जैन एंव बौद्ध मत की दृष्टि में- अनादि पारब्रह्म का अस्तित्व न मानने वाले जैन एंव बौद्ध भी किसी न किसी रूप में श्री प्राणनाथ जी का आगमन अवश्य स्वीकार करते है। जैन मत के "त्रैलोकी त्रैलोक" नामक ग्रन्थ में लिखा है कि जब श्री कृष्ण तीर्थंकर होंगे, तब सभी जीव अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होंगे।

Nijanand App

इसी प्रकार, बौद्ध लोग भी ऐसे बुद्ध के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं, जो गौतम बुद्ध से भी अधिक ज्ञानवान होंगे और उनके द्वारा सम्पूर्ण विश्व का कल्याण होगा। नि:सन्देह वे द्वितीय बुद्ध कोई और नहीं, बल्कि श्री प्राणनाथ जी ही हैं।

कुरान पक्ष में श्री प्राणनाथ जी (श्री जी साहेब जी) - हिन्दू ग्रन्थों में पारब्रह्म के जिस अवतरण को 'श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार' कहा गया है, कुरान की भाषा में उन्हें ही आखरूल जमां इमाम मेंहदी, बाईबिल में 'Supreme truth God' भी कहा गया है।

संक्षेप में, श्री प्राणनाथ जी के आगमन से सम्बन्धित कुरान की ये भविष्यवाणियां निम्नलिखित हैं -

वल्मौता यब् असुहुमुल्लाह सुम्म अिलैहि युर्जअुन।

मंजिल २, सिपारा ७, सूरत ६, आयत ३६

अल्लाह मुर्दों को कयामत के दिन उठाएगा और फिर सभी उसी (अल्लाह की अदालत) की तरफ जाएंगे। शरीर को कब्र कहा गया है, उसमें स्थित जीव ही मुर्दा हैं। इमाम मेंहदी के लाए हुए तारतम ज्ञान से जीव भी जाग्रत होकर पारब्रह्म की तथा अपनी पहचान कर लेंगे। इसी को कब्रों से मुर्दों का उठना कहा गया है, किंतु ऐसा तभी होगा, जब खुदा स्वयं ईमाम मेंहदी के रूप में आकर जाग्रत बुद्धि का ज्ञान लाएं। इस आयत से कयामत के समय में ईमाम मेंहदी का आना सिद्ध होता है। अत: कयामत का समय सिद्ध होने पर अल्लाहतआला के भी आने का समय स्पष्ट हो जाएगा। व यकूलून मता हाजलपऽदुअिन् कुन्तुम सादिकीन (२९) कुल लकुम

मीआदु यौमिल्ला तसत् अखिरून अन्ह साअतौंव ला तस्तक्दिमून (३०)

मं० ५, सि० २२, सू० ३४, आ० २९, ३०

और यह काफर तुमसे पूछते हैं कि बताओ ! अगर तुम सच्चे हो तो यह कयामत का वादा कब पूरा होगा? कह दो कि तुम्हारे साथ एक दिन का वायदा है। तुम न उसके एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे।

अल्लाहतआला पारब्रह्म ने जबराईल के द्वारा रसूल मुहम्मद के पास यह संदेश भिजवाया कि कयामत कल को होगी, जिसमें एक घड़ी भी न तो कम होगी और न अधिक होगी।

या अैयुहल्लजीन आमनुन्तकुल्लाह वल्तन्जुर नफसुम्मा कद्दमत् लिगदिन् ज वत्तकुल्लाह त अिन्नल्लाह खबीरूम बिमा तऽमलून।।

मं० ७, सि० २८, सू० ५९, आ० १८

हे ईमान लाने वालों ! अल्लाह का डर रखो और कोई भी व्यक्ति हो, वह देख ले कि उसने कल के लिए क्या भेजा है और अल्लाह का डर रखो।

इस आयत से यह स्पष्ट हो जाता है कि कयामत कल को ही होगी।

व यस्तऽजिलूनक बिलअजाविं व लैंयुखलिफल्लाहु वऽदहु व् व अिन्न यौमन् अिन्द रब्बिक कअलिफ् सनतिम्मिम्मा तअुद्दून। मं० ४ सि० १६, सू० २२, आ० ४७

और ऐ पैगम्बर ! तुमसे सजा की जल्दी मचा रहे हैं (कि कहां है तुम्हारा खुदाई अजाब?) और अल्लाह तो कभी अपनी वादा खिलाफी नहीं करेगा और (कुछ शक नहीं कि) तुम्हारे परवरदिगार

Nijanand App

के यहां का एक दिन तुम लोगों को गिनती के अनुसार हजार वर्ष के बराबर है।

दुनिया के १०० वर्षों के बराबर खुदा की एक रात होती है। इस प्रकार, (१०००+१०० =११००) अर्थात् ११ वीं सदी में आखरूल ज़मां ईमाम मेंहदी के प्रगटन का समय निश्चित होता है।

हदीसों में भी कहा गया है कि कयामत के दिन तुम अपने अल्लाह का दीदार करोगे और कोई दिक्कत नहीं होगी।

मुकम्मल सही बुखारी हजरत इमाम सफा ६६४/९

बाईबिल के कथनानुसार – Bible के अंदर भी श्री प्राणनाथ जी के आगमन को 'Lord' या 'Second Christ' के आगमन के रूप में वर्णित किया गया है।

I will be found by you, declares the Lord, " and will bring your back from captivity. I will gather you from all the nations and places where I have banished you " delares the Lord, "and will bring you back to the place from which I carried you into exile"

Page 869 JEREMIAH 29: 14

पारब्रह्म ने घोषणा की कि मैं तुम्हें ढूढंकर बन्धनों से मुक्त कराकर वापिस ले आंऊगा। मैं तुम्हें संसार के सभी देशों से एकत्रित करूंगा और वापिस अपने अखण्ड स्थान पर लाऊंगा, जहां से तुम्हें संसार देखने के लिए भेजा गया था।

When the son of Man comes in his glory and all the angels with him, he will sit on his

throne in heavenly glory. All the nations will be gathered before him and he will separate the peopole one from another as a shepherd separates the sheepo from the goats. He will put the sheep on his right and the goats on his left.

Page 2097=98= MATHEW 25:31-33

अर्थात् आखिरी ईसा (मानव पुत्र, Second Christ) अपनी महिमा के साथ और सभी फ़रिश्यतों के साथ आंएगे तो वह नूरानी सिंहासन (तारतम ज्ञान रूपी सिंहासन) पर बैठेंगे। सभी देशों के प्राणी उनके सामने होंगे और वे अपने चुनिंदा लोगों (ब्रह्मसृष्टियों) को वैसे ही छांटेगे जैसे एक गड़रिया अपनी भेड़ों को बकरियों के झुण्ड में से अलग करता है। वह भेड़ों (ब्रह्मसृष्टियों) को अपनी दाईं ओर और बकरियों (ईश्वरी सृष्टि) को बाईं ओर (बहिश्तों में) रखेगें।

For the Lord himself will come down from heaven, with a lovd command with the voice of the archangel and with the trumpet call of God and the dead in christ will rise first. After that we who are still alive and are left will be caught up together with them in the clouds to meet the Lord in the air. And so we will be with the Lord forever. Therefore encourage each other with these words.

Nijanand App

Page 1326 STHESSALONIANS 4:16, 17, 18

परमधाम से पारब्रह्म हुकम की शक्ति की तीव्र आवाज तथा तुरही की आवाज (अशराफील) के साथ आएंगे और कब्र से ईसा पहले उठेंगे। उसके पश्चात् हममें से तब तक जो लोग (तारतम ज्ञान से) जीवित हो चुके होंगे या इससे वंचित रह चुके होंगे वे भी सभी प्रेममयी मार्ग (हवा) में पारब्रह्म से मिलने के लिए तारतमरूपी बादलों में साथ-साथ जाएंगें। इस प्रकार, हम हमेशा पारब्रह्म के साथ रहेंगे। इसलिए प्रत्येक को हम इन शब्दों से प्रोत्साहित करें।

The day of the Lord will come
like a thief in the night.

Page 1326 THESSALONIANS 5.

पारब्रह्म के आने का दिन रात्रि में आने वाले एक चोर की तरह होगा।

इन धर्मग्रन्थों के प्रमाणों से यही निष्कर्ष निकलता है कि वि० सं० १७३५ और शालिवाहन शाका के १६०० वर्ष का वही समय है, जो हिजरी सन् १०९० (११ वीं सदी) का है। दोनों पक्षों में दो तनों (श्री सुन्दरबाई, श्री इन्द्रावती और ईसा रूह अल्लाह के दो तनों) में पारब्रह्म के द्वारा लीला करने का वर्णन है। इसी प्रकार, कयामत के अधिकतर निशान कुरान और बाईबिल में एक समान है। कुरान के हुकम की शक्ति और असराफील को बाईबिल में Arch-angel और Trumpet call of God कहा गया है। कुरान एवं हदीसों में वर्णित आखरूल जमां ईमाम मेंहदी को ही बाईबिल Second Christ, Son of Man और Lord कहा गया है। इसी प्रकार, यहूदी धर्म-ग्रन्थों में उन्हें आखिरी मूसा भी कहा गया

है। ये सभी साक्षियां उस पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द श्री प्राणनाथ जी (श्री जी साहेब जी) के ही सम्बन्ध में की गई है।)

श्री बीतक साहेब के कथनानुसार - मूल बीतक साहेब में 'महामति' की छाप है, जो यह सिद्ध करती है कि यह ग्रन्थ अक्षरातीत के द्वारा ही कहा गया है। इस प्रकार, इस ग्रन्थ के कथनों में किसी भी प्रकार के संशय का प्रश्न ही नहीं उठता। श्री मूल बीतक साहेब में अनेकों ऐसे प्रसंग हैं, जो श्री प्राणनाथ जी को पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द सिद्ध करते हैं।

भगवान रेवादास जब श्री केशव भट्ट जी को परमधाम के ज्ञान एवं श्री जी साहेब जी की जाहेरी पहचान बताते हैं तो उनके मुख से अनायास ही ये शब्द फूट पड़ते हैं।

यह तो अक्षरातीत था, तुम न करी पहिचान।
अब मैं उतहीं जात हों, मुझे आया ईमान।।
बीतक साहेब ३३/२८

अर्थात् हे रेवादास जी ! जिनको तुम भूलवश एक क्षत्रिय समझ बैठे हो, वे तो साक्षात् अक्षरातीत थे। तुमने उनके वास्तविक स्वरूप की पहचान नहीं की है। मुझे उनके स्वरूप के सम्बन्ध में अटल ईमान आ गया है। मैं तो अब वहीं जा रहा हूं, जहां वे गए हुए हैं।

ठट्ठेनगर में कबीर जी के एक 'शब्द' की चर्चा सुनकर चिन्तामणि जी ने श्री जी के स्वरूप की पहचान कर ली और अपने शिष्यों से बोले -

मैं तुमसे कहता था, जो सब्द आगे चलत।
अपने सेवकों से कही, वह सख्स पहूंचा इत।।
बी०सा० २३/२५

हे शिष्यों ! मैं तुमसे जिन पारब्रह्म के आने के विषय में कहा करता था, ये (श्री प्राणनाथ जी) वही पारब्रह्म है। देखो! इनके द्वारा कहे हुए शब्द किस प्रकार से अखण्ड धाम का वर्णन कर रहे हैं।

Nijanand App

जिन्दादास माली ने जब श्री लक्ष्मण सेठ (श्री लाल दास जी) को मार्कण्डेय के दृष्टान्त से समझाकर प्रबोधित किया तो श्री जी की चर्चा सुनने के पश्चात् उनको पूरी पहचान हो गई।

गीता और भागवत के, खोल दिए सब द्वार।
आई वस्त अखण्ड, देखे धनी निरधार।।

बीतक साहेब २५/१२

जब श्री प्राणनाथ जी ने गीता और भागवत के प्रमाणों से क्षर-अक्षर अक्षरातीत की पहचान कराई तो उन्हें श्री प्राणनाथ जी की पूरी पहचान हो गई कि ये ही हमारे धाम-धनी हैं। उदयपुर में जब श्री जी साहेब चर्चा करते थे तो सुन्दरसाथ को साक्षात् श्री राजजी के दर्शन होते थे -

इन समे उदयपुर में, बड़ो भया चरचा को पूर।
दरसन राज के होवहीं, बड़ा रोसन हुआ जहूर।।

बीतक साहेब ४८/५४

जब दिल्ली से १२ मोमिन श्री जी के पास वापिस आए तब इस समय उदयपुर में श्री जी की चर्चा के पूर के पूर बहने लगे। इस प्रकार, श्री जी की चर्चा का खूब प्रचार-प्रसार हुआ।

औरंगाबाद में जहान महम्मद अपने मुख से श्री प्राणनाथ जी से कहते हैं -

मैं तो साहेब देखिया, जाहिर अपने नैन।
तहां खतरा होत है, ए मुख थे न कहो बेन।।

बीतक साहेब ५३/११३

मैंने अपनी इन आंखों से आपके स्वरूप में साक्षात् अल्लाहतआला का दीदार किया है। हे धाम धनी ! आप अपने मुख से ऐसा न

कहिए कि मैं इन जाहिल पठानों की बात मान लूं। यदि मैं आपके पास आता हूं तो मेरी जान का खतरा है और नहीं आता हूं तो ईमान से गिर जाने का मुझे खतरा है।

रामनगर में भिखारीदास ने श्री जी साहेब जी के स्वरूप की पहचान करके शेख खिदर को भी उनकी पहचान कराई। शेख खिदर से भिखारी दास जी कहते हैं

तुम चलो उतहीं, करावें दीदार।
जो देखो हकीकत उनकी, जो पाओ परवरदीगार।।

बीतक साहेब ५८/१००

आप वहीं चलिए, जहां श्री प्राणनाथ जी ठहरे हुए हैं। मैंने उनके विषय में आपसे जो कुछ भी कहा है, उसे आप अपनी ही आंखों से प्रत्यक्ष देख लीजिए। मैं आपको उनके दर्शन कराऊंगा। यदि आप उनके ज्ञान की हकीकत को समझ जाएंगे तो निश्चित रूप से उनके स्वरूप में आपको पारब्रह्म (अल्लाहतआला) के ही दर्शन होंगे।

होने लगी चरचा, कयामत का मजकूर।
सनंधे सुनी तिनने, सब देखा हक जहूर।।

बीतक साहेब ५८/१०३

जब श्री जी साहेब जी के मुखारविन्द से कयामत के सम्बन्ध में चर्चा होने लगी और शेख खिदर ने ईमाम मेहंदी के आने की सनन्धें सुनी तो उसने श्री प्राणनाथ जी को साक्षात् अल्लाहतआला (पारब्रह्म) के ही स्वरूप में पहचाना।

रामनगर में ही सूरत सिंह ने श्री प्राणनाथ जी को पूर्ण ब्रह्म के स्वरूप में पहचाना और देवकरंन जी को भी उनके स्वरूप की पहचान कराई।

Nijanand App

सूरत सिंह ईमान ल्याइया, देख के दीदार।
सक मन में ना रही, देखा धनी निरधार।।

बीतक साहेब ५९/२

श्री प्राणनाथ जी का दीदार करके सूरत सिंह जी ईमान ले आए। उनके मन में किसी भी तरह का संशय बाकी न रहा। क्योंकि उन्होंने श्री प्राणनाथ जी को साक्षात् पारब्रह्म के स्वरूप में देखा।

सुनिया तारतम इनने, देखी हक सूरत।
ए बात मैं किनसों कहों, कौन ल्यावे प्रतीत इत।।

बीतक साहेब ५९/३

सूरत सिंह जी ने तारतम लिया और श्री जी के स्वरूप में अपने धाम के धनी श्री राजजी की पहचान की। उन्होंने अपने मन में विचार किया कि मैं धनी की इस पहचान के सम्बन्ध में किस को बतांऊ? मेरी बातों पर कौन विश्वास करेगा?

गया दीवान देवकरन पे, एक सुनी मैं बात।
तुमारे आगे कहत हों, मैं देखी हक जात।।

बीतक साहेब ५९/४

सूरत सिंह दीवान देवकरन जी के पास गए और उनसे कहा कि मैंने एक बात सुनी है। उसे मैं केवल आपके ही सामने कहता हूं। मैंने अक्षरातीत पारब्रह्म और उनकी ब्रह्मसृष्टियों को अपनी आंखों से देखा है।

चलो मेरे साथ तुम, मैं करांऊ दीदार।
केतकी पर रहत है, देखो धनी निरधार।।

बीतक साहेब ५९/५

आप मेरे साथ चलिए ! मैं आपको उनका दर्शन कराऊँगा। वे केतकी नदी के किनारे पर ठहरे हुए हैं। निश्चित रूप से वे साक्षात् धाम के धनी पूर्ण ब्रह्म हैं।

जब श्री प्राणनाथ जी श्री पन्ना जी में पहुँचे तो उस समय उन्हें पूर्ण ब्रह्म ही कहा गया -

नदी किलकिला तीर पे, उतरे परमहंस 'आए।
तिनमें सिरदार अक्षरातीत, देख अपना ठौर सुख पाए।।

बीतक साहेब ६०/१२

श्री पन्ना जी में किलकिला नदी के तट पर परमधाम की ब्रह्मसृष्टियां उतरीं। उनके प्रियतम आप अक्षरातीत धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब ने अपने निश्चित स्थान को देखकर आनन्द का अनुभव किया।

महाराजा छत्रसाल जी ने श्री प्राणनाथ जी को श्री बाई जू राज सहित सिंहासन पर बैठाकर उन्हें साक्षात् पूर्णब्रह्म माना और उनकी आरती उतारी।

साथ समस्त के बीच में, जुगल धनी बैठाए।
कही तुम साक्षात् अक्षरातीत हो, हम चीन्हा तुम्हेंबनाए।।

बीतक साहेब ६०/५७

पुनः महाराजा छत्रसाल जी कहते हैं -

श्री ठकुरानी जी साथ संग ले, पधारे मेरे घर।
धनी बिना तुम्हें और देखे, सो नहीं मिसल मातवर।।

बीतक साहेब ६०/५८

हे मेरे धाम के धनी ! आप श्री श्यामा महारानी जी के स्वरूप श्री बाई जू राज को साथ लेकर आज मेरे घर पधारे हैं। यदि कोई भी आपको धाम धनी के सिवाय प्रभु, महाप्रभु, संत, कवि या वैरागी

Nijanand App

के रूप में देखता है तो निश्चित रूप से वह परमधाम की ब्रह्मसृष्टि नहीं है, बल्कि संसार का अन्धा जीव है। महाराजा छत्रसाल जी की सभा में काजी अब्दुल रसूल ने कुरान के विषय में होने वाली वार्ता में हार मानकर यह स्वीकार किया कि श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी ही आखरूल जमां ईमाम मेंहदी साहब (अल्लाह तआला) हैं।

तब काजी कदमों लगा, किया सेजदा हक।
हम तहकीक पहचानिया, यह बात बड़ी बुजरक।।

बीतक साहेब ६०/१०८

तब काजी ने श्री प्राणनाथ जी के चरणों में सिजदा बजाया और स्पष्ट रूप से कहा कि मैंने यह अच्छी तरह से पहचान लिया है कि ये श्री प्राणनाथ जी ही अल्लाह तआला हैं।

यह बहुत बड़ी बात है कि मैंनें आखरूल जमां ईमाम मेंहदी साहब को पहचान लिया है।

बलदीवान के आपत्ति करने पर काजी ने अपने सिर पर कुराने पाक को रखकर कहा कि यदि मैं जरा भी झूठ बोलूं तो मेरा नाश हो जाए।

तब जवाब काजी दिया, मुसाफ सिर हमारे।
जो हम झूठ बोलहीं, तो एही हमको मारे।।

बीतक साहेब ६०/११०

काजी अब्दुल रसूल कहते हैं -

ए तहकीक जमाने का खाविन्द, जो करी थी सरत।
सो सरत आए पहुंची, फरदा रोज कयामत।।

बीतक साहेब ६०/१११

ये श्री प्राणनाथ श्री जी साहेब जी ही आखिरी जमाने के खावंद अल्लाह तआला हैं। मुहम्मद साहब ने जो पहले ही कहा था कि खुदा ने मुझसे वायदा किया है कि मैं फरदारोज कयामत अर्थात् ११ वीं सदी में आऊंगा। यह ११ वीं सदी ही चल रही है और ये ही अल्लाह तआला है।

इसी प्रकार, कालपी के मुल्ला, मौलवियों ने भी स्वीकार किया कि श्री प्राणनाथ जी ही अल्लाह तआला हैं।

यह हम तहकीक किया, खाविन्द जमाने का।
हम अपनी आखों देखिया, जो कुरान हदीसों लिखा।।

बीतक साहेब ६०/११२

मुल्ला मौलवियों ने लिखित रूप में स्वीकार किया कि ये श्री जी साहेब जी ही आखिरी जमाने के खांवद हैं। कुरान-हदीसों में उनके आने के सम्बन्ध में जो निशानियां लिखी हैं, वे श्री प्राणनाथ जी में प्रत्यक्ष दिखती हैं। इसे हमने अपनी आंखों से साक्षात् देखा है।

Nijanand App

एही अक्षरातीत है, एही हैं धनी धाम।
एही महम्मद मेंहदी ईसा, एही पूरे मनोरथ काम।।
बीतक साहेब ६८/७२

ये श्री प्राणनाथ जी ही साक्षात् अक्षरातीत धाम के धनी हैं। इनके अन्दर ही मुहम्मद साहब, ईसा रूह अल्लाह (श्री श्यामा महारानी) भी हैं। ये श्री जी साहेब श्री प्राणनाथ जी ही सबकी कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं।

श्री बीतक साहेब के इन कथनों से यही सिद्ध होता है कि सर्व श्री केशवदास जी, चिन्तामणि जी, लालदास जी, जहान मुहम्मद, भिखारी दास, सूरत सिंह तथा महाराजा छत्रसाल जी जैसे अमीरूल मोमिन ने भी श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी को अपना धाम धनी, पूर्ण ब्रह्म, सच्चिदानन्द, अल्लाहतआला ही माना किंतु आजकल गीता और भागवत के अध्ययन के आधार पर श्री प्राणनाथ जी को सन्त और कवि की उपमा देने वाले विद्वत जन अंधों में काने सरदार की तरह सत्य को ही झुठला रहें हैं। वे सूर्य को दीपक, हीरे की कांच और मोती की सीप से तुलना कर रहे हैं।

सम्पूर्ण बीतक साहेब में 'श्री राज' शब्द ३२४ बार, 'हक' शब्द १६५ बार और 'धनी' शब्द ११४ बार आया है, जिसमें श्री प्राणनाथ जी को २२६ बार राजजी, २२ बार हक और २८ बार धनी कह कर सम्बोधित किया गया है। उनकी प्रकरण एंव चौपाई सहित सूची निम्नलिखित है -

श्री राज -प्र०७/२१//२०/२८//२१/ १५, २१, २४, २६ //२२/२२, २९, ४१//२४/३, १०, १९//२५/

//२९/४//३३ /५, २६/२४//२७/६, ९, १०, २२, ६४,७६//२९/४//३३ /५, २६/२४//२७/६, ९, १०, २२, ६४,७६//३१/३४, ४७, ४९, ५०//३५ ७, ११, ३६, ४८, ५०//३४/२७, ३५, ४७, ४९, ५०//३५ /२६, ३३, ३५, ४६, ५४, ६२, ६८ //३६/७ //३६/५७//३८/१,१८//३९/१, ८, ९, १४, १५, १६, ३२, ४४, ५९, ६४, ६७, ६८, ७२, ७३, ९१, ९५//४०/४५, ६४//४१/५ //४२/३४, ४१, ३६, ४३, ४४, ५०, ५३, ५४, ५५//४३/५७//४४/१//४९+५१, ५४, ५५, ८७, ८८//५०/४४//५१/३६, ३८, ४४,//५२/३, ६, ७, ९, १०, ११, १२//५३/४५, ६२, ६३, ६६, ९१, ९४//५७/२८, ३६, ५२, ५३, ८५//५८/१०, ११, १७, १९, २०, २१//५९/१५, २०, २५, २७, ३८, ४०, ४१//६०/२, १०, १५, २०, ३१, ३३, ३९, ४३, ४९, ५६, ६०, ६३, ६४, ६८, १३१, १३४, १३५, १४५, १६३, १६४, १६५, १६६//६३/१३, १७, १८, २०, ३३, ३९, ४१, ४२, ५१, ५२, ५५, ६८, ७७, ७८, ८२, ८८, ९२//६४/४, ५, ७, ८, १३, १९//६५/५, ८, २४, ४६, ४९, ५१, ५३, ६१, ६७, ६८, ७०, ७२, ८०, ८१, ८३, ८७, ९१, ५३, ६१, ६७, ६८, ७०, ७२, ८०, ८१, ८३, ९२, ९४//६६/५, ८, ११, १६, १८, ३५, ३८, ४४, ४५//३७/३, ५, २१, ३३, ४०, ४३, ५२, ३५, ३८, ४४, ४५//६७/३, ५, २१, ३३, ४०, ४३, ५२//६८/५, ९, १२, १४, १६, १७, २४, ३०//७०/२३, २४, २६, ३३, ३४, ३८,४० ४८, ५२,५३, ५४, ५६//७१/१, १६, ३६ ४८, ४७// ७२/१४, १८//७३/१०,२४//

हक- ८/२०, २२// २२/ २१// २४/ ७, १७// २६/ २८/२०/ ३३/ ४९ //३९ /२५ //५५/३९ //५७/२२ //५९/३, ४//६०/३२, ७२, ८८, १०८ //६२/६३/६४

Nijanand App

//६५/३, ७५//६८/१५

धनी- ९/८, १२//३२/२०//३३/५, ५९, ६२// ३९/२४//४३/१०, १६//५९/२ ,५//६०/५६, ७६रु //६२/७//६३/२८, ९३//६४/३, ३३//६५/९६ //६६/१९ //६७/४७, ४८//६८/१३, ३९, ६८, ७२//६९/७१//७३/२४

जिस बीतक साहेब में श्री प्राणनाथ जी को सम्वत् सत्रह सौ बाइसे, दीप पधारे श्री राज /२१/१४, न्यारे न्यारे मत सबे, सुने श्री रजा ने सोए /३७/५७ आदि कहकर २२६ बार श्री राज जी के रूप में सम्बोधित किया गया हो, ऐसे धाम धनी को संत या कवि या कृष्ण को अक्षरातीत कहने का दुस्साहस विद्वत वर्ग किस मुख से करता हैं? यदि कोई यथार्थ सत का प्रचार न करे तो उस पर आवरण डालने का भी उसे कोई अधिकारी नहीं होता

श्री मुख वाणी की दृष्टि में-

प्राय: सभी सुंदरसाथ श्री कुलजम स्वरूप साहेब को पारब्रह्म की ही वाणी मानते हैं। पारब्रह्म की वाणी में किसी भी प्रकार के संशय का प्रश्न ही नहीं होता। यदि किसी को ब्रह्मवाणी में भी संशय हो तो वह सुंदरसाथ कहलाने का अधिकारी ही नहीं। श्री मुख वाणी के सम्बन्ध में श्री जी कहते हैं-

दई तुमको मैं कुलजम,. इनको किया गरक।

पढ़ो मेरे कलाम को, भागे सारी सक।।

बीतक साहेब ५४/८७

संक्षेप में, श्री मुखवाणी के प्रत्येक ग्रन्थ (रास से कयामतनामा तक) से वे प्रमाण उद्धत किए जा रहे है।, जो निर्विवाद रूप से यह सिद्ध

करते हैं कि श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी ही पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द हैं।

रास ग्रन्थ से-

साथ मलीने सांभलो, जागी करो विचार।

जेणे अजवालूं आ करयूं, परखो पुरुष ए पार।।

रास १/६

श्री इंद्रावती जी कहती हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! आप सभी सुनिए और जागृत होकर विचार कीजिए। जिस पार पुरुष अनादि अक्षरातीत श्री राजजी ने मेरे अन्दर विराजमान होकर अपनी वाणी के ज्ञान से उजाला किया है, उनकी पहचान कीजिए।

कृपा कीधी अति धणी, वली आव्या तत्काल।

तेहज वाणी ने तेहज चरचा, प्रेम तणी रसाल।।

रास, १/७६

धाम धनी ने हमारे ऊपर बहुत अधिक कृपा की है, जो श्री देवचन्द्र जी के तन को छोड़ने के पश्चात् मेरे तन में विराजमान हो गए हैं और पहले की ही तरह से प्रेम रस में भीगी हुई वाणी चर्चा सुना रहे हैं।

प्रकास गुजराती से-

प्रवोध वचन ने सदा केहेवाय, पण आ वचनकोई प्रगट न थाय।

ते माटे तमें सुणजो साथ, आपणमां बेठा प्राणनाथ।।

प्रकास गुजराती ४/६

दूसरों को प्रबोध देने वाली बातें तो हमेशा ही कही जाती हैं लेकिन परमधाम के इन वचनों को अन्य कोई भी नहीं कह सकता है।

Nijanand App

इसलिए हे सुन्दरसाथ जी आप सुनिए ! हमारे (श्री इन्द्रवती जी के) अन्दर श्री धाम के धनी प्राणनाथ जी विराजमान होकर वाणी से अपनी पहचान करा रहे हैं।

आपणने सिखामण कहे, पण भरम आडे कोई रूदे न रहे।
ते भरम उडाडो तमे जोई रास, जेम ओलाखिए आपणो प्राणनाथ।।

प्र० गु० ४/६

धाम के धनी हमें अनेक प्रकार के सिखपान दे रहे हैं, लेकिन हमारे हृदय में संशय होने के कारण उनकी कोई भी सिखपान हमारे हृदय में ठहरती नहीं है। अपने उस भ्रम को हटाकर रास की वाणी को देखो (मन्थन करो) जिससे मेरे अन्दर विराजमान अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी की पहचान हो सके।

ते माटे तमे सुणजो साथ, जे प्रगट लीला कीधी प्राणनाथ।
कोई मनमां मा धर जो रोष, रखे काढ़ो मेहराजनो दोष।।

प्र० गु० ४/१३

श्री इन्द्रावती जी कहती हैं कि हे सुन्दर साथ जी ! इसलिए आप मेरी बात सुनिए। धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने मेरे अन्दर विराजमान होकर जो प्रत्यक्ष में ब्रह्मलीला की है, उसके सम्बन्ध में मेरे इस तन (मेहराज) को कोई भी दोष नहीं दो और धनी की मेरे ऊपर होने वाली मेहर के कारण अपने मन में किसी भी तरह का क्रोध न रखो। इस चौपाई में श्री इन्द्रावती जी के मेहराज नामक तन में विराजमान होने वाले श्री राजजी को ही प्राणनाथ कहा गया है। स्पष्ट है कि उस तन में धनी की बैठक होने के पश्चात् ही उस तन को 'श्री प्राणनाथ जी' कहलाने की शोभा मिली। अत: उस शोभा को कम करके सन्त या कवि के रूप में देखना बहुत बड़ी भूल

है। उस सम्बन्ध में आगे की चौपाइयों में स्पष्ट रूप से कह दिया गया है-

एटलू तमे जाणों निरधार, आ वचन मेहराजें प्रगट न थाय।
आपण घर नी नहीं ए बात, जे किव करी मांडिए विख्यात।।

प्र० गु० ४/१४

हे साथ जी ! इतनी बात आप निश्चित रूप से जान लीजिए कि श्री मुख वाणी के इन वचनों को मेहराज के द्वारा नहीं कहा जा सकता है। परमधाम की यह रीति नहीं है कि अपने घर की बातों को कविता के रूप में कहा जाए।

हूं मनमांहें एम जाणूं घणुं, जो किव नहीं काम आपणु।
पण आतां नथी कांई किवनी वात, रूदे बेसी केहवराव्युं प्राणनाथ।।

प्र० गु० ४/१५

मैं इस बात को अच्छी तरह से जानती हूँ कि हमारा काम कविता करना नहीं है। परन्तु यहाँ तो कविता करने की कोई बात भी नहीं है, क्योंकि स्वयं धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी मेरे अन्दर बैठकर इस वाणी को कहलवा रहे हैं।

हवे वली आव्या बीजी देह धरी, आपण ऊपर दया अतिकरी।
चेतन करी दीधो अवसर, लई लाभ ने जागिए घर।

प्र० गु० २९/६७

हमारे ऊपर धाम धनी ने बहुत अधिक मेहर की है। इसलिए अब श्री देवचन्द्र जी के तन को छोड़कर दूसरे तन (श्री इन्द्रावती जी) के अन्दर आकर विराजमान हो गए हैं। इस अवसर पर धनी ने हमें वाणी के ज्ञान द्वारा सावधान कर दिया है। इसका लाभ उठाकर

Nijanand App

अब हमें परमधाम में जाग्रत होना है।

एक अखरन्नो पा लवो, कहीं ए प्रगट न थाय।
श्री धाम धणी पधारिया, वाणी तो केहेवाय।।

प्र० गु० ३१/१२४

इस वाणी के एक अक्षर का चौथाई हिस्सा भी कहीं प्रगट नहीं हुआ। जब धाम के धनी श्री इन्द्रावती जी के अन्दर पधारे तभी यह वाणी अवतरित हुई।

जिस तन में पूर्ण ब्रह्म का स्वरूप विराजमान होकर ब्रह्मवाणी कह रहा हो, उस तन को पूर्ण ब्रह्म के सिवाय अन्य कुछ कहा ही नहीं जा सकता है।

आपण मांहें बेठा छे सही, चरण कमल रेहेजो चित ग्रही।

भरम भाजी ओलखजो धणी, दया आपण ऊपर अति धणी।।

प्र० गु० ३२/२८

हे साथ जी ! धाम के धनी श्री राज जी हमारे (श्री इन्द्रावती जी के) अन्दर बैठे हैं। इस बात को अपने चित में रखकर उनके चरण-कमलों में अपने चित्त को लगाओ। हमारे ऊपर धनी की बहुत अधिक मेहर है। अपने अन्दर के संशयों को हटाकर ऐसे मेहरबान श्री प्राणनाथ जी की पहचान कर लीजिए।

खटरूती से-

सदगुरु धनी श्री देवचन्द्र के स्वरूप की पूर्ण पहचान पहले श्री इन्द्रावती जी को नहीं थी किन्तु वि० स० १७१५ में हब्से के अन्दर युगल स्वरूप श्री राज श्यामा जी ने उन्हें दर्शन दिया तब श्री

इन्द्रावती जी को देवचन्द्र जी के वास्तविक स्वरूप की पहचान हुई। दर्शन देने के पश्चात् युगल स्वरूप श्री इन्द्रावती जी के अन्दर विराजमान हो गए और तबसे उन्हें धाम धनी (श्री प्राणनाथ) माना गया। उस समय उनके तन से खटऋतु की वाणी उतरी, जिसके अन्दर पूर्व के प्रसंगों के आधार पर चौपाईयां अवतरित हुई। निम्नलिखित चौपाई में श्री इन्द्रावती जी कहती हैं -

आपोपूं ओलखावी मारा वाला, दरपण दाखो द्वो प्राणनाथ ।
दरपणनूं सूं काम पड़े, ज्यारे पेहेरयूं ते कंकण हाथ।।

८/१०

हे मेरे प्राणनाथ ! आपने अपने स्वरूप की मुझे पहचान दे दी है, किन्तु उसे दर्पण में अर्थात् अखण्ड ब्रज एंव रास के युगल तनों में दिखा रहे हैं। प्रतिबिम्ब तो वास्तविक नहीं होता है। ब्रज और रास की लीलायें प्रतिबिम्ब के समान हैं, जिनमें आपका वास्तविक स्वरूप नहीं है। जब आप प्रत्यक्ष मेरे सामने हैं तो उसे दर्पण में (योगमाया के अन्दर ब्रज एंव रास के अखण्ड तनों में) दिखाने की क्या आवश्यकता है?

यहां यह स्पष्ट है कि जिस अक्षरातीत श्री राजजी को श्री इंद्रावती जी ने सम्बोधित करके उपयुक्त कथन कहा है, वहीं श्री राजजी जब श्री इंद्रावती जी के अन्दर विराजमान हो गए तो उन्हें भी श्री राजजी क्यों नहीं कहा जाए।

कलस गुजराती से-

इंद्रावतीने हूं अंगे संगे, इंद्रावती मारूं अंग।
जे अंग सौपें इंद्रावती ने, तेने प्रेमे रमाडूं रंग।।

कलस गुजराती १२/६६

स्वयं अक्षरातीत श्री राज जी कहते हैं कि मैं इंद्रावती जी के

Nijanand App

अंग-संग हूं। इंद्रावती जी मेरा ही अंग हैं। जो भी सुन्दरसाथ श्री इंद्रावती जी को अपना सर्वस्व समर्पित करेगा उसे मैं अपने प्रेम-रस में आनन्दित करूंगा।

बुध तारतम भेला बंने, तिहां पेहेले पधारया श्री राज।

अंग मारे अजवास करी, साथना सारया काज।।

क० गु० १२/६७

श्री इंद्रावती जी कहती हैं कि जहां जागृत बुद्धि और तारतम एक साथ रहते हैं वहां पहले से ही श्री राज जी विद्यमान रहते हैं अर्थात् मेरे अन्दर श्री राजजी का स्वरूप है। मेरे अन्दर श्री राजजी ने अपने तारतम ज्ञान से उजाला भी कर दिया है और सुन्दरसाथ के सभी कार्यों को भी सिद्ध कर दिया है।

प्रकास हिन्दुस्तानी से -

तो वचन तुमको कहें जाए, जो तुम धाम की लीला मांहे।

वृजवालो पिउ सो एह, वचन अपन को केहेत हैं जेह।।

प्रकास हि० २९/६८

हे साथ जी ! परमधाम की ये बातें आपसे इसलिए कहीं जा रही हैं क्योंकि आप वहां की लीला के रस में डूबे रहने वाले हो। मेरे (श्री इंद्रावती जी के) अन्दर बैठकर आपसे जो ये बातें कह रहे हैं, ये अपने ब्रज वाले वही प्रियतम हैं, जिन्होंने श्री कृष्ण जी के तन में विराजमान होकर हमारे साथ ११ वर्ष ५२ दिन तक की लीला की थी।

रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी है तिने।

धनी धाम के केहेलाए, ए जो साथ को बुलावन आए।।

प्र० हि० २९/६२

रास में जिस स्वरूप ने हमारे साथ आनन्द की लीला की थी, वे ही अब (मेरे तन से) प्रत्यक्ष रूप में लीला कर रहे हैं। ये जो अपनी वाणी से सुन्दरसाथ को जगाने के लिए आए हैं, साक्षात् हमारे धाम धनी ही हैं।

या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान।

याके मगज माएने हम पास, अंदर आए खोले प्राणनाथ।।

प्र० हि० ३७/१०२

कुरान या पुरान हमारी साक्षी के ग्रन्थ हैं और उनके गुझ भेद हमारे ही पास हैं, जिन्हें मेरे (श्री इंद्रावती जी के) अन्दर विराजमान होकर श्री प्राणनाथ जी (अक्षरातीत) खोल रहे हैं।

कलस हिन्दुस्तानी से -

तारतम तेज प्रकास पूरन, इंद्रावती के अंग।

ए मेरा दिया मैं दिवाए, मैं इंद्रावती के संग।।

क० हि० २३/६५

स्वयं अक्षरातीत श्री राज जी कह रहे हैं कि इंद्रावती जी के अन्दर तारतम ज्ञान का पूर्ण प्रकाश है। इसे देने वाला मैं स्वयं मैं हूं तथा इंद्रावती जी के अंदर विराजमान हूं।

Nijanand App

सुख देऊं सुख लेऊं, सुख में जगाऊं साथ।
इंद्रावती को उपमा, मैं दई मेरे हाथ।।

क० हि० २३/६८

श्री राज जी कहते हैं कि मैं सब सुदरसाथ को सुख देते हुए अपने आशिक पने का सुख लेता हूं और इस प्रकार, सुख में रखकर सबको जगाता भी हूं। श्री इंद्रावती जी के अंदर विराजमान होकर अपने नाम की उपमा मैंने स्वयं ही इंद्रावती को दी है।

सनन्ध ग्रन्थ से –

बड़ा मेला इत होएसी, आए खुद खसम।
बखत भला साहेब दिया, भाग बड़े हैं तुम।।

सनंध २१/६

इस समय स्वयं पारब्रह्म अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब आए हुए हैं। यहां (ब्रह्मसृष्टि तथा ईश्वरीसृष्टि का) बहुत बड़ा मेला होगा। हे मोमिनों ! यह तुम्हारा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि तुम्हें यह सुनहरा अवसर मिला है।

जब इमाम इत आइया, तब ए सारे संग।
सरूप मेहंदी याही को, यामें देखोगे कई रंग।।

सनंध २९/१८

जब इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी इस दुनिया में आ गए तो उनके स्वरूप में यह सभी (श्यामा जी, जबराईल, असराफील तथा अक्षर ब्रह्म की आत्मा) होंगे, इसलिए इनको मेंहदी का स्वरूप कहा

गया है। इनके अंदर इन शक्तियों के होने से अनेक प्रकार की लीला होगी।

उठके आप खड़ी रहो, ल्यो अंग में आनन्द।
इस्क देखाओ अपना, मासूक करो परसंद।।

सनंध २८/३२

हे मोमिनों ! अब उठकर खड़े हो जाओ और अपने दिल में बहुत खुशियां मनाओ क्योंकि अब आपके बीच में साक्षात् पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब आ गए हैं। अपने माशूक श्री प्राणनाथ जी को इश्क (अंगना भाव) से रिझाओ।

आया सबका खसम, सब सब्दों का उस्ताद।
महंमद मेंहदी आए बिना, कौन मिटावे वाद।।

सनंध ३०/४१

अब सभी धर्मग्रन्थों के मूल मालिक सबके पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी आए हुए हैं। आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथ जी के बिना सभी मत-मतान्तरों के झगड़ों को कौन मिटा सकता है।

सुनियो दुनिया आखिरी, भाग बड़े है तुम।
जो कबूं कानों न सुनी, सो करो दीदार खसम।।

सनंध ३३/१

हे आखिरी दुनिया के लोगों ! सुनों ! तुम्हारा यह बहुत बड़ा सौभाग्य है कि जिस अक्षरातीत पारब्रह्म के बारे में तुमने कभी अपने कानों से भी नहीं सुना था, अब वे ही अक्षरातीत श्री प्राणनाथ

Nijanand App

जी आ चुके हैं। अब आकर उनका साक्षात् दर्शन करो।

कई देव दानव हो गए, कई तीर्थंकर अवतार।
किन सुपने न श्रवनों, सो इत मिल्या नर नार।।

सनंध ३३/३

इस संसार में अनेकों देवता, दानव, तीर्थंकर और अवतार हो गए। उन्होंने सपने में भी अक्षरातीत पारब्रह्म के बारे में नहीं सुना। अब वही अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी इस दुनिया के लोगों को साक्षात् मिल गए हैं।

करी अनेकों बंदगी, इस्क लिया कई जन।
तिन काहूं ना नजीक, सो इत मिल्या सबन।।

सनंध ३३/४

इस दुनिया में अनेक लोगों ने प्रेम का मार्ग अपनाया और बन्दगी भी की। लेकिन उनमें से किसी को भी पारब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई। अब वे ही पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी सबको आकर मिल गए है।

किरंतन से -

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।
सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।।

किरंतन ५२/२५

श्री कृष्ण के अवतारों के बीच में पारब्रह्म की लीला छिप गई थी। अब वही पारब्रह्म पुनः इस जागनी ब्रह्माण्ड में आ गए हैं और

अपनी पहचान प्रगट कर रहे हैं।

सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख वैराट।
लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।।

किरंतन ५२/२६

वह पारब्रह्म अक्षरातीत अपनी पहचान (श्री प्राणनाथ, श्री जी साहेब) चारों ओर फैलाकर सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड मुक्ति का सुख देंगे। वे इस संसार में अपने दोनों लौकिक नामों श्री कृष्ण और श्री देवचन्द्र जी को हटाकर (श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी) के रूप में नई शोभा से युक्त होंगे।

आवसी धनी धनी रे सब कोई केहेते, आगमी करते पुकार।
सो सत बानी सबों की करी, अब आए करो दीदार।।

किरंतन ५३/७

सभी भविष्यवक्ता एवं धर्मग्रन्थ पहले ही पुकार रहे थे कि २८ वें कलियुग में पारब्रह्म को आना है। पारब्रह्म ने स्वयं आकर उनकी भविष्यवाणी को सत्य सिद्ध कर दिया है। हे दुनिया के लोगों ! अब आए हुए साक्षात् पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी का दीदार करो।

प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्ट सिरदार।
ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आए करो दीदार।।

किरंतन ५७/२

सबके बीच पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी प्रगट हो गए हैं। वे

Nijanand App

ब्रह्मसृष्टियों के प्रियतम हैं। हे ईश्वरी सृष्टि और जीवसृष्टि वालों ! आप सभी आकर ऐसे पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी का दर्शन करो।

बृज लीला लीला रास माहें, हम खेले जान के जार।
जागनी लीला जाग पेहेचान, पिउसों जान विलसे करतार।।

किरंतन ५४/१५

ब्रज और रास की लीला में हमको अपने धनी की पहचान न होने के कारण यार भाव से लीला की थी, किन्तु इस जागनी के ब्रह्माण्ड में हमें अपनी आत्मा के प्रियतम श्री प्राणनाथ जी की पहचान करके तथा जागृत होकर धनी का सुख लेना है।

सुर असुर सबों को ए पति, सब पर एकै दया।
देत दीदार सबन को सांई, जिनहूं जैसा चाहया।।

किरंतन ५८/७

श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब हिन्दू और मुसलमान सबके ही धनी हैं। उनकी मेहर सब पर समान है। उनको जो कोई भी जिस रूप में चाहता है वे उसी रूप में दर्शन देते हैं।

मोहे अपनो सब दियो, रही न कोई सक।
सही नाम दियो मोहोर अपनी, कर रोसन थापी हक।।

किरंतन ६१/१८

श्री इंद्रावती जी कहती हैं कि धनी ने मुझे सब कुछ दे दिया। इस सम्बन्ध में किसी भी तरह का कोई भी संशय नहीं रह गया। उन्होंने अपने सही नाम श्री जी साहेब की मुहर भी मुझे दे दी और दुनिया में मुझे पूर्णब्रह्म के रूप में जाहिर कर दिया।

बोझ अपनो निज वतन को, सो सब मेरे सिर दियो।
नाम सिनगार शोभा सारी, मैं भेख तुमारो लियो।।

किरंतन ६२/१५

हे धनी ! आपने अपने परमधाम के सम्पूर्ण कार्य (रूहों की जागनी) का सम्पूर्ण बोझ मेरे ऊपर दे दिया है। मैंनें आपका नाम (श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब) श्रृंगार, शोभा तथा भेष भी धारण कर लिया है।

अलिफ लाम मीम हरफ ए कहे, ए भेद न किन समझाए।
सो छीले गए कुरान से, ए भेद जाने एक खुदाए।।

किरंतन ७१/१७

आज दिन तक कुरान के हरूफ मुक्तआत अलिफ, लाम और मीम जो पहले सिपारे का नाम है। (बसरी, मलकी आर हकी) का बातूनी भेद किसी को भी मालूम नहीं था। इनके भेदों को खोलने की शोभा खुदा (श्री प्राणनाथ जी श्री ज़ी साहेब) को ही है।

इत हुज्जत न रही काहू की, तुम देखो एह सुकन।
एह खिताब महंमद मेंहदी पे, जिन रोसन किए मोमिन।।

किरंतन ७१/१८

इस बात को विचार कर देखिए । हरूफे मुक्तआत के भेद खुल जाने के पश्चात् श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब के पूर्ण ब्रह्म कहलाने में किसी भी प्रकार का विवाद रहा ही नहीं। यथार्थ में यह शोभा तो आखरूल जमां ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी की ही है, जिन्होंने इसके भेदों को मोमिनों में जाहिर कर दिया।

Nijanand App

यों कई बिध समझाई दुनियां, देने हम पर ईमान इस्क।

धनी नाम खिताब दे अपनो, मुझे बैठाई कर हक।।

किरंतन ७९/२०

धनी ने दुनिया को हम पर ईमान और इश्क लाने के लिए कई प्रकार से समझाया। धनी ने मुझे अपना ही नाम (प्राणनाथ, श्री राज, श्री जी साहेब) देकर और खिताब देकर मुझे पारब्रह्म के रूप में बिठा दिया।

महामत कहे सुनो साथ, देखो खोल वानी प्राणनाथ।

धनी ल्याए धाम से वचन, जिनसे न्यारे न होए चरन।।

किरंतन ७६/२५

श्री महामति जी कहते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! आप मेरी बात सुनिए ! अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी की वाणी को विचारिए। इस वाणी को स्वंय धाम धनी ही लाए हैं अब इस वाणी से प्राणनाथ जी कभी भी जुदा नहीं हो सकते।

इस चौपाई में 'महामति' और 'प्राणनाथ' को अलग-अलग बताया गया है। श्री इंद्रावती जी की शोभा का नाम ही 'महामति' हैं। अतः यह स्पष्ट है कि प्राणनाथ अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म को ही कहते हैं।

जो साहेब किन देख्या नहीं, न कछु सुनिया कान।

सो साहेब इत आवसी, करसी कायम सब जहान।।

किरंतन ९६/२५

कुरान में लिखा है कि जिस पारब्रह्म को आज तक किसी ने देखा नहीं और न कानों से सुना ही है, वे ही पारब्रह्म

(श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब) इस संसार में कयामत के समय आएगें और सारी दुनिया को अखण्ड मुक्ति देंगे।

और भी फुरमान में लिखया, कोई खोल न सके किताब।

सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब।।

किरंतन १०४/८

कुरान में यह बात भी लिखी है कि इसके भेदों को खोलने की शोभा केवल अक्षरातीत पारब्रह्म (श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब) को ही है। उनके सिवाय अन्य कोई भी इसके भेदों को नहीं खोल सकता है।

कह्या साहेब इत आवसी, सो झूठ न होए फुरमान।

सबका हिसाब लेय के, कायम करसी जहान।।

किरंतन ९८/३

कुरान में लिखा है कि अल्लाहतआला यहां आकर सबका हिसाब लेकर सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड करेंगे। कुरान का यह कथन कदापि झूठा नहीं हो सकता है।

नर नारी बूढ़ा बालक, जिन इलम लिया मेरा बूझ।

तिन साहेब कर पूजिया, अर्स का ए ही गुझ।।

किरंतन १०९/२१

अब नर-नारी, बालक-वृद्ध जिसने भी मेरी वाणी को समझा है, वह मुझे साक्षात् अक्षरातीत श्री जी साहेब ही मानकर पूजा कर रहे हैं। परमधाम का यह ही गुझ भेद है।

Nijanand App

खुलासा से -

धनी माएने खोलसी, सत जानियो सोए।

साहेब बिना ए माएये, और खोल न सके कोए।।

खुलासा १४/६

इस बात को आप सत्य मानना कि एकमात्र पारब्रह्म ही कुरान के रहस्यों को खोलेंगे। अक्षरातीत पारब्रह्म (श्री जी साहेब जी) के बिना इसके रहस्यों को और कोई भी दूसरा नहीं खोल सकता है।

नाम सारे जुदे धरे, ऊपर करी इसारत।

फुरमान खोल जाहेर करे, धनी जानियो तित।।

खुलासा १४/७

कुरान में विभिन्न कथानकों के पात्रों के अलग-अलग नाम हैं और संकेतों में रहस्यों को समझाया गया है। ऐसे कुरान के बातूनी भेदों को जो स्पष्ट कर देगा, वह ही पारब्रह्म होगा (वह श्री प्राणनाथ जी ही हैं)

खिलवत से -

साहेदी देवे जो खुदाए की, सोई खुदा जान।

सो साहेदी किन न लई, हाए हाए मगज न पाया कुरान।।

खिलवत १२/३३

कुरान में लिखा है कि खुदा की गवाही खुद खुदा ही देगा। इस गवाही को किसी ने भी नहीं जाना। हाय ! हाय ! किसी ने भी

कुरान के इस रहस्य को क्यों नहीं समझा?

इस्कें फुरमान आइयां, वास्ते इस्क न खुल्या किन।

वास्ते इस्क के गैब हुआ, इस्के खुले ना खुदा बिन।।

खिलवत १२/४४

इश्क का परिचय देने के लिए ही कुरान आया। इश्क की पहचान न होने से ही किसी ने आज दिन तक कुरान के भेदों को नहीं खोला। इश्क के कारण ही खिलवत में रब्द हुआ था। पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी के बिना इश्क के भेदों को कोई भी खोल ही नहीं सकता।

परिकरमा से -

अब सो साहेब आइया, सब सृष्ट करी निरमल।

मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।।

परिकरमा २/१२

अब परमधाम से हमारे धाम के धनी श्री राज जी (श्री जी साहेब) ही आ चुके हैं। उन्होंने सारी सृष्टि को निर्मल कर दिया है। वे सबके अन्दर के मोह, अहं को समाप्त करके अखण्ड सुख देंगे।

अखंड सुख सबन को, होसी चौदे तबक।

सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावें दीदार सब हक।।

परिकरमा २/१७

अब इन ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से चौदह लोकों के प्राणियों को अखण्ड मुक्ति मिलेगी तथा सारी दुनिया पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी का दर्शन करेगी।

Nijanand App

सागर से -

अव्वल कह्या फुरमान में, इत काजी होसी हक।
करसी कायम सबन को, ऐसी मेहेर होसी मुतलक।।

सागर १७

कुरान में पहले ही यह बात कही गई है कि खुद अक्षरातीत पारब्रह्म इस दुनिया में न्यायाधीश (श्री जी साहेब) के रूप में आएंगे और अपनी मेहर से सारे संसार को अखण्ड मुक्ति देंगे।

सिनगार से -

हकी हक अर्स करे जाहेर, ऊग्या कायम सूर फजर।
होसी सब हैयाती, देख कायम खिलवत नजर।।

सिनगार ३/२६

हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी ही परमधाम को जाहिर करेंगे। उनका अखण्ड सूर्य के समान वाणी का ज्ञान अंधकार को हटाकर सवेरा करने वाला है।

उनकी वाणी से सभी खिलवत का ज्ञान प्राप्त करके अखण्ड हो जाएंगे।

ले हकी सूरत हक इलम, करसी जाहेर हक बिसात।
खिलवत भी छिपी ना रहे, करे जाहेर वाहेदत हक जात।।

सिनगार ३/२७

हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी अपनी ब्रह्मवाणी से परमधाम की सारी बातों को जाहिर करेंगे। वे रूहों की वाहेदत तथा परमधाम की खिलवत को भी जाहिर करेंगे।

अर्स बका की हकीकत, माहें लिखी कतेब वेद।
खोले जमाने का खावंद, और खोल न सके कोई भेद।।

सिनगार ३/५०

अखण्ड परमधाम की हकीकत वेद और कतेब में लिखी तो है किन्तु इनके भेदों को आखिरी जमाने के खाविंद हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब के बिना और कोई भी खोल नहीं सकता है।

सिन्धी से -

इलम डिंने पांहिजो, जेमें सक न कांए।
डिंनिए संग साहेबी, जित जाणजे की न सांजाए।।

सिन्धी ३/४

श्री इंद्रावती जी कहती हैं कि हे धनी ! आपने मुझे अपना ज्ञान दिया, जिसमें किसी भी तरह का संशय नहीं है। आपने मुझे अपनी साहेबी भी दे दी है, जिसकी पहचान संसार में किसी को नहीं है। (जिसके अन्दर हक की साहेबी हो, वह हक का ही स्वरूप है)

आंऊ बेठिस हिनजे घर में, मूंके रख्याई भली भत्त।
केयांई सभे बंदगी, जांणी तोहिजी निसबत।।

सिन्धी ५/२३

मैं शाकुण्डल (छत्रसाल जी) के घर में बैठी हूं। मुझे आपका ही स्वरूप जानकर सभी अच्छी प्रकार से मेरी सेवा-बन्दगी कर रहे हैं।

Nijanand App

मांधा जणाया सभ के, डियण केक आकीन।
ईदो रब आलम जो, सभ कंदो हिक दीन।।

सिन्धी ८/७

आपने पहले से ही सबको यह जानकारी दे दी सारे जगत के मालिक पारब्रह्म आ रहे हैं। जो एक दीन (श्री निजानन्द सम्प्रदाय) की स्थापना करेंगे।

मारफत सागर से -

वह झंडा जो जाहेरी, सो भी हक हादी बिना कौन उठाए।
जिन जैसी नीयत, तिन तैसी दई पोहोंचाए।।

मारफत सागर १२/१०

शरीयत के जाहेरी झण्डों को पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब के बिना कौन समाप्त कर सकता था। जो जिस नीयत से श्री प्राणनाथ जी के पास आया, उसको उसके अनुसार ही मंजिल मिली।

आगूं जिन बंदगी करी, ए सोई जमाना बुजरक।
सो देखो इत हक कदमों, कोई पीछा रहे न मांहें खलक।।

मारफत सागर १३/२४

पहले से जिन लोगों ने तपस्या करके यह वर मांग रखा था कि पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब जी के आने पर हमको मनुष्य तन मिले, यह वही श्रेष्ठ जमाना आ गया है।

देखिए ! अब पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी के चरणों में सभी दौड़-दौड़ कर आ रहे हैं। कोई भी पीछे नहीं है।

कयामतनामा से-

ए फुरमान रूहअल्ला पर, ल्याया हक का रसूल।
इमाम खिताब खोले किताब, परे न मारफत भूल।।

छोटा कयामतनामा २/९८

श्री राज जी से रसूल साहेब श्री श्यामाजी के वास्ते कुरान लाए। उसे वे अपने दूसरे जामे में श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप में श्री कुलजम स्वरूप के द्वारा खोल रही हैं। यह खोलने की शोभा पारब्रह्म श्री प्राणनाथ जी को ही है।

ओ उरझे जुदे नाम धर, रब आलम का आया आखिर।
अपनी अपनी में समझे सब, जुदा न रह्या कोई अब।।

बड़ा कयामतनामा १/३०

संसार के सभी मत- पन्थ वाले पारब्रह्म के जुदे-जुदे नाम रख कर विवादों में उलझे हुए हैं, जबकि सारे ब्रह्माण्डों के मालिक पूर्ण ब्रह्म श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब आए हुए हैं। अब तारतम ज्ञान से सभी अपनी- अपनी भाषा में समझ जाएंगे और श्री प्राणनाथ जी के चरणों से कोई भी जुदा नहीं रहेगा।

ब्रह्माण्ड को भान्यो खिलाफ, सब जहान को कियो मिलाप।
ग्वाही खुदा की खुदा देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे।।

बड़ा कयामतनामा १/३३

अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी ने संसार के सभी धर्मो के झगड़े मिटाए और उनको एक झण्डे के नीचे लाए। यह खुद खुदा हैं।

Nijanand App

हुकम की आड़ में अपनी गवाही स्वयं दे रहे हैं।

और लिख्या सिपारे पांचमे, सो नीके कर देखो तुमे।
कृपा भई हिंदुओं पर धनी, जित आखिर को आए धनी।।
बड़ा कयामतनामा ७/७

कुरान के पांचवें सिपारे में यह बात संकेतों में लिखी है। इसलिए आत्मिक दृष्टि से देखिए। तब आपको यह जानकारी होगी कि श्री अक्षरातीत की विशेष कृपा हिन्दुओं पर हुई है क्योंकि अक्षरातीत स्वयं हिन्दू तन में श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब के स्वरूप में आए हैं।

श्री मुखवाणी, श्री बीतक साहेब और सभी ग्रन्थों के प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब ही पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द अक्षरातीत हैं, जिसे श्री मुखवाणी एवं श्री बीतक साहेब के भी कथनों पर विश्वास नहीं है, उसके विषय में तो केवल इतना ही कहा जा सकता है कि -

माथे लेसे तेने कहूं छूं , बीजा मां करजो दुःख।
तमें तमारी माया माहें, सेहेजे भोगवजो सुख।।
किरंतन

किन्तु, जिन सुन्दरसाथ जी ने श्री प्राणनाथ जी के स्वरूप की वास्तविक पहचान की है, उनकी अन्तरात्मा में श्री छत्रसाल जी के यही स्वर गूंजता रहता है -

एही टीका एही पांवड़ो, एही निछावर आय।
श्री प्राणनाथ जी के चरन पर, छत्ता बलि-बलि जाय।।
बीतक साहेब ६०/५५

आज माया की घोर आंधी के भौतिक वाद (Materialism)

की होड़ में फंस कर मानव यह भूल गया है कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ मरने के बाद मुझे कहाँ जाना है और मेरा भर्तार कौन है? ये सब प्रश्न तो ध्यान में तभी आते हैं जब मनुष्य अपनी मानवता में रहकर सात्विक भोजन करता है। आज का अधिकांश मानव सात्विक भोजन को छोड़कर राक्षसी भोजन कर रहा है जिससे उसकी बुद्धि भी राक्षसी हो गयी है और उसका व्यवहार भी राक्षसों जैसा हो गया है। गलत तरीकों से पैसा लूटना और माँ-बहनों को अपमानित करना ही उसका मुख्य कर्म रह गया है। उधर यह २८ वां कलियुग है जहाँ हर सम्प्रदाय के मूल ग्रन्थों (वेद, शास्त्र, पुराण, ग्रन्थ साहेब, बीजक, कुरान एवं बाईबिल) में स्पष्ट लिखा है कि इस कलियुग में वह एक परब्रह्म सच्चिदानन्द अक्षरातीत परमात्मा अपनी आत्माओं के कारण मानव तन धारण करेंगे और अपने परमधाम की निज बुद्धि के ज्ञान से सभी धर्म ग्रन्थों की यह बात सिद्ध करेंगे कि सबका परमात्मा एक है। वे अपनी आत्माओं को माया के दुःखों का ज्ञान देकर उन्हें वापस परमधाम ले आयेंगे और सारे ब्रह्माण्ड के जीवों के जाल में फंसकर आवागमन के चक्र से नहीं छूट सके थे, सब देवी-देवता और त्रैगुन सहित योगमाया के ब्रह्माण्ड में अखण्ड मुक्ति देंगे।

ये बात हर धर्म ग्रन्थ में लिखी है किन्तु, हर धर्म के स्वार्थी एवं मान अभिमान में डूबे विद्वानों ने आज धर्म ग्रन्थों को सुनाने का धन्धा बनाकर जिन गहरी बातों का पता नहीं चलता, उनको भी बदल डाला है। अपने निश्चित समय पर परब्रह्म एक मानव तन में प्रकटे। उन्होंने वि. सं. १७३५ में हरिद्वार में कुम्भ के मेले में हिन्दू धर्माचार्यों के सम्मुख उनके धर्म ग्रन्थों द्वारा अपनी पहचान करायी तो उन्होंने सिर झुकाकर उन्हें अक्षरातीत परब्रह्म श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार स्वीकार किया। उसके पश्चात्

Nijanand App

१७३६ में औरंगजेब के काजी जो कुरान को बिल्कुल जानते ही नहीं थे और शरीयत के मनमाने नियम बनाकर हिन्दुओं पर अत्याचार ढाते थे। वे हिन्दुओं को गोश्त खिलाकर तलवार के जोर से जबरदस्ती मुसलमान बना रहे थे। उस समय औरंगजेब के दरबार में जाना मौत के ही मुंह में जाना था। ऐसे समय में श्री प्राणनाथ जी ने कुरान की टीका तथा तफसीरे हुसैनी से अपने साथियों को समझाया कि कुरान में ब्रज, रास, सात दिन की लीला तथा परमधाम का ही वर्णन है। अन्तर केवल भाषा का है। औरंगजेब परमधाम की निर्मल आत्मा है। काजी लोग मनमानी शरीयत से हिन्दुओं पर अत्याचार कर रहे हैं। तुम औरंगजेब के पास जाओ और उन्हें कुरान में वर्णित ११ वीं सदी में इमाम मेंहदी के आने की बात बताकर मेरे स्वरूप की पहचान कराओ मोमिन सनन्ध ग्रन्थ से यह बिल्कुल समझ चुके थे कि हमारे ये तन मिट जाने वाले हैं, जबकि असल तन परमधाम में मूल मिलावे में हैं। श्री राज जी के चरणों तले बैठे हैं। इसलिये उन्होंने श्री जी साहिब जी के हुक्म को अक्षरातीत का हुक्म मानकर औरंगजेब के दरबार में चले गये। उन्होंनें जब कुरान के बातूनी अर्थों को खोलकर इमाम मेंहदी का आना जाहिर किया तो औरंगजेब तथा काजियों ने यह स्वीकार कर लिया कि श्री प्राणनाथ जी ही आखरूल जमां इमाम मेंहदी है। किन्तु राजपाट चले जाने के भय से औरंगजेब श्री जी साहेब जी के चरणों में नहीं आया।

अब ऐसे ठोस प्रमाणों से तो वही इन्सान परब्रह्म की खोज में निकलेगा, जिसको माया से मुक्त होने का कुछ दर्द होगा। ये दर्द तो त्रिदेवा और देवी देवताओं को भी नहीं है। पंचभौतिक तत्व से बने मानव को यह ज्ञान मिल सकता था, यदि वह सात्विक भोजन

पर आ जाता। माया ने इन्सान को अपने फंदे में बांधे रखने के लिये अन्धकार का ऐसा जाल बिछा रखा है कि आज का मनुष्य पशुओं जैसा खाना-पीना और व्यवहार करता है और इसी में अपना गौरव समझता है। जो ज्ञान श्री जी साहेब परमधाम से लेकर आये हैं, उस ज्ञान को पाने के लिये जब से यह सृष्टि बनी है, त्रिदेवा तथा आदि नारायण खोज-खोज कर थक गये। स्वयं लक्ष्मी जी इस ज्ञान के लिए ७ कल्पान्त तक तपस्या करती रही, लेकिन उन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं हो सका।

इस बात को पढ़ कर शायद आपका मन तड़प उठे कि वह परब्रह्म जो एक है, आदि नारायण एवं त्रिदेवा को भी जब नहीं मिल सका, तो हमें कैसे मिल सकेगा। गुरुजनों को तो मिलना इसलिये असम्भव था कि सभी गुरुजन देवी-देवताओं के द्वारा बनाये हुए ग्रन्थों का ही अध्ययन कर देवी-देवताओं को ही परमात्मा का स्वरुप मानकर प्रचार करते हैं। इन गुरुजनों के द्वारा परमात्मा के अलग-अलग स्वरुप बताये जाने के कारण ही अलग-अलग सम्प्रदाय एवं इष्ट हो गये। संसार के सभी लोग अपने गुरुजनों, मौलवियों तथा पादरियों के पीछे चलते हैं, इसलिये आज का लगभग हर मानव सत्य से भटक गया है और उस सच्चिदानन्द पूर्ण ब्रह्म को इस मिथ्या जगत के अन्दर कोई कण-कण में मानता है तो कोई साकार, कोई निराकार मानता है। कोई जल-थल एवं वृक्षों में भी परब्रह्म का स्वरुप मानने की भूल करते हैं।

अब आप सोचोंगें कि जब सारी दुनिया ही भूली है, तो जहाँ सब जायेंगे, वहाँ हम भी चले जायेंगे। इसलिये इस ग्रन्थ का नाम भी 'पढ़ो, सोचो और समझो' रखा है इसे आप पढ़ कर सोचें कि मनुष्य तन कितनी कठिनाइयों के बाद मिलता है। ८४ लाख

Nijanand App

योनियों में भटकने के पश्चात् यह मानव तन प्राप्त होता है। ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। पहले मनुष्य तन, दूसरा भारतवर्ष, तीसरा २८ वां कलियुग और चौथा परब्रह्म अक्षरातीत का ज्ञान मिलना देवी-देवताओं को भी असम्भव है।

आप अपने मन में यह सोच सकते हैं कि अरे भाई ! हम तो माया के जीव हैं और कितने बुरे काम करते हैं तो हमें यह ब्रह्म ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता है तो यह पढ़िए ! सोचिए और समझिए कि जिस तरह से सदियों से पड़ा हुआ सड़ा-गला लोहा भी पारस मणि से छू जाने के पश्चात् सोना बन जाता है। जबकि परब्रह्म तो पारसों के भी पारस हैं। आप उनका ज्ञान प्राप्त कर उनके चरणों से अपना सम्बन्ध जोड़कर, जन्म-मरण के चक्र से छूटकर एवं सभी पापों से मुक्त होकर अखण्ड मुक्ति की प्राप्ति कर सकते हैं। करना क्या पड़ेगा कि इन पांच वस्तुओं का परहेज करना पड़ेगा जो परब्रह्म ने अपनी आत्माओं को निर्मल करने के लिए करवाया है। जप-तप, दान, पुण्य, वन में गमन, योग साधना आदि खान-पान करके इन नियमों का पालन करने से आत्मा-जीव निर्मल नहीं हो सकते। परब्रह्म ने कहा है -

१. तम्बाकू का खाना-पीना बिल्कुल ही निषेध है।

२. मांस-मछली आदि का सेवन बिल्कुल ही नहीं करना चाहिए, क्योंकि पशुओं का रक्त जब मनुष्य के अन्दर जायेगा तो बुद्धि भी पशुओं जैसी हो जायेगी।

३. शराब और सब प्रकार का नशा जैसे कि गांजा, भांग, अफीम आदि का सेवन बुद्धि का नाश करता है।

४. पर स्त्री एवं चरित्रहीन स्त्रियों का संग नहीं करना, क्योंकि ऐसा

करने से बुद्धि का नाश हो जाना है।

५. चोरी और झूठ बोलना भी उतना ही पाप है, जितना अन्य प्रकार के पहले वाले पाप बताये गये हैं।

जब आप इन पांचों नियमों का आचरण माह दो माह कर लेंगे तो आप देखेंगे कि आपकी बुद्धि जागृत बुद्धि के ज्ञान को मिनटों में ही पकड़ लेगी। ८४ लाख योनियों में मानव योनि की ही यह विशेषता है कि उसमें सोचने की विवेकशील बुद्धि है। यह बुद्धि मनुष्य के सिवाय अन्य किसी भी योनि में नहीं है। जब हमें यह अनमोल मनुष्य तन मिला है तो सदा-सदा के लिय आवागमन के चक्र से छूटने के लिए हम यदि इन पांच बुराइयों का निषेध कर दें तो इस कलियुग में श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब की पहचान कर सकते हैं। उनकी पहचान के सभी ग्रन्थ निजानन्द सम्प्रदाय से पार उतरने का साधन उपलब्ध होता है। विशेषकर बुद्ध गीता, बुद्ध स्तोत्र, पुराण संहिता, माहेवश्र तन्त्र, संसार और मेरा भर्तार तथा सत्य दर्शन जैसी किताबों को पढ़ने से अन्जान से अन्जान व्यक्ति भी परब्रह्म के उस स्वरूप के विषय में दूसरों को समझा सकता है, जिसे देवी-देवता भी नहीं समझ सके थे। लेकिन दु:ख की बात यह है कि यहाँ के ज्ञानियों ने भावावेश में आकर झूठ को ही सत्य बना दिया है जैसे महर्षि वाल्मीकी ने अपनी रामायण में कहीं भी राम को भगवान का दर्जा नहीं दिया है। केवल आदर्श राजा और आदर्श मानव के रूप में वर्णन किया है। किन्तु तुलसीदास जी ने अपनी रामायण के हर काण्ड में राम को सच्चिदानन्द परब्रह्म लिखा है। वे लिखते हैं-

Nijanand App

सियाराम मय सकल जग जानी,

करहूं प्रणाम जोरि जुग पाणी।

अर्थात् मैं इस संसार के सभी प्राणियों को सीता-राम का ही स्वरूप समझ कर उन्हें दोनों हाथ जोड़ कर प्रणाम करता हूँ।

किन्तु वे ही जब भ्रमण करते हुए वृन्दावन में पहुंचे, तो वहाँ पर गली-गली में राधा-कृष्ण की ही मूर्तियों को देखा, तो मुग्ध हो गये किन्तु प्रणाम नहीं किये। वे बोले-

क्या शोभा है आपकी, भले बने हो नाथ।

तुलसी मस्तक तब नवे, जब धनुष वाण लो हाथ।।

अर्थात् भले ही आप की शोभा मनमोहक है किन्तु जब तक आप धनुष वाण लिये हुए राम के रूप नहीं दर्शन देते, तब तक मैं आपको प्रणाम नहीं कर सकता।

अब आप ही बताइये कि राम को किस प्रकार पूर्ण ब्रह्म माना जा सकता है। उधर राधा-कृष्ण को मानने वाले कभी भी अयोध्या के राम को अपना इष्ट नहीं मान सकते। वैसे तो सभी ही कहते हैं कि परब्रह्म एक है, किन्तु उस एक परब्रह्म को जाने बिना लोगों ने आज हजारों भगवान बना लिये हैं। ऐसे लोग अपने भगवानों के असल स्वरूप को तो क्या पहचानेगें? वे लोग अपने भावों से पत्थर को घढ़ कर ही भगवान का रूप बना रहे हैं तथा हिन्दू धर्म के अनेकों सम्प्रदाय तथा जैन एवं बौद्ध मत के सभी लोग मूर्तियों की पूजा कर रहे हैं।

अब यदि सोचा जाये कि भगवान इन्सान को बनाता है या इन्सान भगवान को बनाता है। आप भी कहते हैं कि भगवान ही इन्सान को बनाता है, इन्सान कभी भी भगवान को नहीं बना सकता किंतु अपने ही मन्दिरों में आप देखिए तो पता चलेगा कि आप के ही बनाए हुए भगवान मन्दिरों में पधराये हुए हैं, जिनको आप सच्चिदानन्द मान रहे हैं। ऐसी स्थिति में आपको क्या मिलेगा? हर कोई अपने भगवान को 'एक सच्चिदानन्द परमात्मा' का रूप कहते हैं, लेकिन-

मानने वाले जो राम के हैं, उनको इस्लाम से बू आती है।

मानने वाले जो मक्के हैं, उनको भगवान से बू आती है।।

कौन चलेगा ये प्रभु, तेंरे नक्शे कदम पर।

यहाँ इन्सान को इन्सान से बू आती है।।

उधर वेदों के मानने वाले कहते हैं कि 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' किन्तु वे नीच जाति वालों को गायत्री का मन्त्र नहीं देते। इस प्रकार वेद वाले भी वेद के विरुद्ध चलते हैं। आजकल के विद्वानों ने ग्रन्थों का मूल स्वरूप ही बिगाड़ रखा है। गीता प्रेस गोरखपुर ने हरिवंश पुराण के भविष्य पर्व अ. ४ श्लोक २१ में ब्रह्मरुपिण: के स्थान पर बहुरुपिण: कर दिया है।

अभाविनों भविष्यन्ति मनुयो बहुरुपिण:

उत्पन्ना ये कृत युगे प्रधान पुरुषश्रया:।।

जिस श्लोक से कलियुग में आने वाले परब्रह्म और उनकी आत्माओं की पहचान होती है, उस श्लोक के मूल रूप को ही गीता

Nijanand App

प्रेस ने बदल डाला। इसी प्रकार काजी लोग कुरान में लिखे हुए हरुफे मुक्तेआत के भेद नहीं समझ पाये। जैसे- जब इन्जुलना सूरत में हजार महीने की रात लिखी है। जब उनको हकीकत का पता नहीं लगा तो उन्होंने रमजान की २७ वीं रात को ही लैल तुल कद् की रात मान कर दुनिया को बहका रखा है। इसी प्रकार कुरान में मुहम्मद साहब ने लिखवा रखा है कि जब पूर्ण ब्रह्म अल्लाह तआला इस दुनिया में आयेंगे तो ६ दिन तक रहेंगे। छठे दिन अपनी आत्माओं (उम्मत) को अर्श की नमाज पढ़ायेंगे। उस नमाज को पढ़ने वाले अर्शे अजीम में जायेंगे। भारत से लेकर दुनिया का कोई भी काजी आज दिन तक यह नहीं जान सका है कि वे ६ दिन कौन से हैं? वे लोग ब्रह्मा के बनाये हुए रविवार, सोमवार आदि दिनों के आधार पर ही छठा दिन जुमें को मानकर नमाज पढ़ते हैं और परमधाम में जाने का झूठा दावा लेते हैं। शरीयत और तरीकत की बन्दगी शरीर तथा मन से होती है और वह धनी तक किसी को नहीं पहुँचाती। स्वयं सच्चिदानन्द परब्रह्म ने आकर बताया कि वे ६ दिन ब्रह्मा के बनाये हुए दिन नहीं है। वल्कि वे दिन इस प्रकार हैं- १. व्रज का २. अखण्ड रास का ३. अरब में आकर कुरान के अवतारण कराने का ४ सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी का ५. हकी सूरत श्री प्राणनाथ जी का तथा ६. मोमिनों का। फरदारोज का अर्थ कल का दिन होता है, जिसे काजी लोग नहीं समझ पाते हैं। फरदारोज ग्यारहवीं सदी को कहा गया है, क्योंकि दुनिया के १००० साल को खुदा का एक दिन तथा १०० साल को खुदा की एक रात माना गया है। इस प्रकार ११ वीं सदी में खुदा का आना कुरान से सिद्ध होता है। अलिफ, लाम और मीम की यदि आप टीका पढ़ें तो उसमें स्पष्ट लिखा है कि इस का भेद केवल अल्लाह तआला ही जानता है।

श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहेब के हिन्दु धर्म ग्रन्थों के अनुसार वि. स. १७३५ तथा कुरान के अनुसार ११ वीं सदी में अपने वायदे के अनुसार एक मानव तन में प्रकट हुए। उन्होंने सभी धर्मों के गुझ मायनों को खोलकर सबको एक सच्चिदानन्द परब्रह्म का ज्ञान दिया। तथा सभी धर्मों के झगड़ों एवं जाति-पाति के भेद को मिटाकर बताया कि चांहे कोई जाति-पाति से छोटा हो या बड़ा, हिन्दू हो या मुसलमान या ईसाई। तो वह शरीर से ही है, आत्मा से नहीं। आत्मा तो धर्म, कर्म, जाति-पाति से परे की वस्तु है। इसलिए शास्त्रों में लिखा है कि आत्मा ही परमात्मा है। जीव जो जन्म लेता है, कर्म करता है तथा उसका फल भुगतता है, उसको ही इस दुनिया के बड़े-बड़े ज्ञानी जन 'आत्मा' की संज्ञा देते हैं। इस प्रकार यह सारा संसार ही भटका हुआ है। धर्म ग्रन्थों में स्पष्ट लिखा है कि २८ वें कलियुग से पहले परब्रह्म का ज्ञान इस दुनिया में आया ही नहीं था। यह अनहोनी बात २८ वें कलियुग में होनी थी जिसमें परब्रह्म की आत्मायें इस दुनिया में आकर परब्रह्म के नाम, धाम, स्वरूप और लीला को बतायेंगी, जिसे सुनकर अपना सम्बन्ध परब्रह्म से जोड़ने वाला इस भवसागर से पार हो जायेगा। उनकी वाणी में कहा गया है कि-

निजनाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।
मुक्त देसी ब्रह्माण्ड को, आये ब्रह्म आतम सत।।
किरंतन

इस संसार में ज्ञान को कई विद्वान पैसा बटोरने के लिए प्रयोग करते हैं और अपने-अपने भगवान की महिमा गाकर जनता को गुमराह करते हैं। जैसे कि तुलसी दास जी ने सब को परब्रह्म की तरफ से हटाकर विष्णु भगवान की १२ कला के अवतार राम

Nijanand App

को ही सच्चिदानन्द परब्रह्म बना दिया।

इसी प्रकार महाभारत के शान्ति पर्व के ४७ वें अध्याय में प्रसंग आता है कि जब भीष्म पितामह तीरों की शैय्या पर लेटे हुए थे तो पाण्डव युद्ध समाप्त होने के पश्चात् उनके पास गये तथा पूछे कि हे पितामह ! आप जैसा धर्म निष्ठ व्यक्ति तो इस संसार में और कोई भी नहीं है, फिर भी आप को तीरों की शय्या पर क्यों लेटना पड़ा है? उस समय भीष्म पितामह ने नारायण स्वरूप श्री कृष्ण की पहचान कराते हुए कहा कि-

एकोडपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो दशाश्वमेधाव भृथेन तुल्यः।

दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म कृष्ण प्रणामी न पुनर्भवाय।।

शान्ति पर्व ४७, ९२ अर्थात् जो इस श्री कृष्ण की पहचान करके समर्पित होकर प्रणाम करता है, वह सीधा बैकुण्ठ की मुक्ति को प्राप्त करता है इस श्लोक के अर्थ को तोड़-मोड़ कर नेपाल से आये हुए कुछ धर्म प्रचारकों ने अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए श्री कृष्ण को ही अक्षरातीत एवं मुक्ति का दाता मानकर वेद-शास्त्रों के विरुद्ध अन्धकार का प्रचार किया। वेदों, शास्त्रों में यह स्पष्ट रूप से लिखा है कि वह परब्रह्म नाम, तत्व, गुण तथा षट प्रमाणों से रहित है। सारे विश्व में नेपाल ही एकमात्र हिन्दू राज्य है। जिनके अन्दर कट्टर हिन्दूपना, मुस्लिमपना या ईसाईपना होता है, वे जल्दी में परब्रह्म के स्वरूप की यथार्थ पहचान नहीं कर पाते हैं।

If you are hindu, muslim, sikh, christian or something as by body not by soul.

हम शरीर से ही हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, सिख, ईसाई आदि हैं,

आत्मा से नहीं आत्मा इन चीजों से परे है। वह तो परब्रह्म का अंग है। आत्माओं के इस संसार में आने के कारण से ही परब्रह्म का इस संसार में आना सम्भव हुआ। करोड़ों बार यह दुनिया बनी और प्रलय को प्राप्त हो गई। लेकिन उनमें परब्रह्म नहीं आये थे। ऐसे सत्य ज्ञान को ढांपने के लिये कुछ लोगों ने ऐसा मनमाना धर्म चला दिया है, जिसकी कोई पद्धति नहीं है। न इष्ट का कोई प्रमाण है और नहीं धर्म का कोई चलाने वाला। नेपाल से कुछ लोगों ने आकर कहीं का ईंट तथा कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनवा जोड़ा की तरह सबको भटका रखा है कि श्रीकृष्ण ही अक्षरातीत है। यदि श्रीकृष्ण ही अक्षरातीत हैं तो द्वापर में वसुदेव-देवकी के तन से जन्म लेने से पहले या गर्गाचार्य द्वारा नाम रखे जाने से पहले श्रीकृष्ण को परब्रह्म कहीं भी नहीं कहा गया। इस प्रकार सत्य को ढांप कर अपना स्वार्थ पूरा करने वाले गुरुओं से बचकर ही आपको सत्य की पहचान हो सकेगी। शास्त्र, कुरान, बाईबिल तथा ग्रन्थ साहेब आदि में कलियुग में ही अक्षरातीत श्री जी साहेब जी का आना लिखा है। अब आप अपनी थोड़ी सी बुद्धि के द्वार भी सोचें कि यदि कलियुग में श्रीकृष्ण ही अक्षरातीत है तो वे आये क्यों नहीं? राम या अन्य अवतार क्यों नहीं आये? गीता में श्रीकृष्ण जी ने कहा है-

यदा यदा हि धर्मस्य गलानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्था पनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

अर्थात् जब-जब धर्म का क्षय ओर अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब मैं अवतरित होता हूँ। साधुओं की रक्षा दुष्टों के विनाश

Nijanand App

तथा धर्म की स्थापना के लिये मैं युग-युग में प्रकट होता हूँ।

इन श्लोकों से यह सिद्ध होता है कि गीता के कहने वाले केवल सन्तों के ही हैं, दुष्टों के नहीं। क्या किसी ग्रन्थ में लिखा है कि परमात्मा केवल सन्तों का ही है, दुष्टों का नहीं। सभी ग्रन्थों में लिखा है कि परमात्मा सबका है और सबको भवसागर से पार करके अखण्ड मुक्ति देने वाला है। श्री जी साहेब ने अपनी वाणी में कहा है-

मोहे दिल में ऐसा आइया ये जो खेल देख्या ब्रह्माण्ड।

तो क्या देखी हम दुनिया, जो इनको न करें अखण्ड।।

किरंतन ९६/१९

वे कहते हैं कि मैं सबका एक परमात्मा हूँ। मैं सबके गुण-अवगुण को माफ करके सबको भवसागर से पार करुंगा मेरे परब्रह्म होने की यही निशानी है।

अब आप सोचे कि यदि हम उनका नाम हिन्दुओं वाला रख दें तो मुसलमान कभी भी नहीं मानेंगे और यदि मुसलमानों वाले नाम रख दें तो हिन्दू नहीं मानेंगे। कृष्ण का जन्म वासुदेव-देवकी के तन से कंस के जेल में हुआ था उस समय रोहिणी नक्षत्र तथा वृष राशि होने से देवजनों ने 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' कह कर उनकी स्तुति की। फिर जब गोकुल में उन्हें नन्द जी के घर पहुंचाया गया तो उस समय मृगशिर नक्षत्र तथा मिथुन राशि होने से नन्द जी के पुरोहित गर्गाचार्य जी ने उनका नाम श्रीकृष्ण रखा। यह प्रसंग भागवत के दसवें स्कन्ध में स्पष्ट रूप से लिखा है। धर्म

ग्रन्थों के अनुसार जो जन्म लेता हे, उसकी मृत्यु अवश्य होती है। जो जन्म और मृत्यु के वशी भूत है, वह कभी भी अक्षरातीत परब्रह्म नहीं हो सकता है। भारतीय जनता भगवा वस्त्रधारी साधुओं पर स्वभावत: नत मस्तक होती ही है। इन भगवाधारी नेपालियों ने एक नहीं अनेकों ढोंग बनाये हैं। इनमें केवल ब्राह्मण नेपाली को ही धर्म प्रचारक बनने का अधिकार होता है क्षत्रिय, वैश्य या शुद्र को नहीं इन्होंने अपनी गद्दियों के स्थानों पर परब्रह्म की वाणी के स्थान पर संस्कृत का पठन-पाठन और राधा-कृष्ण के पूजन की परम्परा डाल दी है तथा जाति-पाति का आडम्बर खड़ा कर दिया है जबकि मनुस्मृति आदि अनेकों ग्रन्थों में जन्म के आधार पर नहीं, बल्कि कर्म के आधार पर जाति का होना माना गया है तथा स्पष्ट रूप से कहा गया है कि-

शुद्रों ब्रह्मणतापेति ब्रह्मण, इति च शुद्रताम्।

क्षत्रियात् जातमेवावन्तु विद्यात् वैश्य तथैव च।।

अर्थात् शुद्र कुल में उत्पन्न होकर यदि उसका गुण कर्म स्वभाव ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य के समान है तो उसको ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य कुल में जन्म लेने वाले व्यक्ति का कर्म शुद्र के समान है, तो उसको शुद्र कुल का मान लेना चाहिए।

लोक में यह बात प्रसिद्ध है कि- नामना जायते शुद्रो संस्कारात् द्विज उच्यते। आर्थात् जन्म से सभी शुद्र ही के रूप में पैदा होते हैं किन्तु संस्कारों के कारण ही वे द्विज ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य बनते हैं। जाबाल ऋषि गड़ेरिया थे। मातंग ऋषि चाण्डाल थे, जानश्रुति ऋषि शुद्र थे, विश्वामित्र क्षत्रिय थे फिर भी ये अपने ज्ञान, तप एवं श्रेष्ठ कर्मों से ऋषि महर्षि कहलाये, जबकि ब्राह्मण कुल में उत्पन्न

Nijanand App

होने वाले विश्रवा मुनि का पुत्र होकर भी रावण अपने बुरे कर्मों से राक्षस ही कहलाया ब्राह्मण कहलाने का उसे कोई अधिकार नहीं मिल सका।

इस प्रकार तारतम ज्ञान को ग्रहण कर परब्रह्म का यथार्थ ज्ञान रखने वाले सुन्दर साथ ही वास्तविक ब्राह्मण है, भले ही इनके तन का जन्म किसी भी कुल में क्यों न हुआ हो। सुन्दर साथ के बीच में जाति-पाति के नाम पर भेद-भाव की लकीरें खींचना महा पाप है। दुर्भाग्यवश नेपाली समाज जन्म के आधार पर मानी जाने वाली जाति-पाति की रुढ़िवादिता से ऊपर नहीं हो सका है।

अंग्रेजों की ईस्ट इंडिया कम्पनी भारत के लोगों को बहकाती रही और गुलाम बनाकर उसने शासन भी किया। जाते-जाते अंग्रेजों ने भारतवर्ष के कई टुकड़े भी कर दिये। पाकिस्तान, नेपाल, बर्मा, श्रीलंका सभी भारत के पहले अंग थे। इसी प्रकार भगवाधारी नेपाली भागवत प्रचारकों ने जब देखा कि श्री प्राणनाथ जी के साहित्य को छिपाये बिना हम पैसा नहीं बटोर सकेंगे तो उन्होंने श्री जी साहिब की पहचान वाली मूल बीतक साहिब को छोड़ कर अन्य आठ बीतकों का प्रचार किया और सबको भ्रमित करके यह बताया कि श्री प्राणनाथ जी श्री जी साहिब के पिता केशव ठाकुर थे तथा उनके गुरु श्री देवचन्द्र जी थे। श्री मुख बीतक साहिब में स्पष्ट लिखा है कि श्री केशव ठाकुर के पांच लड़के थे-

१. हरवंश ठाकुर २. सांवलिया ठाकुर ३. गोवर्धन ठाकुर ४. मेहराज ठाकुर तथा ५. ऊधव ठाकुर।

सबसे पहले श्री देवचन्द्र जी के तन में जिसमें परमधाम की श्यामा महारानी थी, उन्हें पूर्ण ब्रह्म अक्षरातीत ने दर्शन दिया और

अपनी पहचान देकर उनके अन्दर प्रवेश किया। तन तो श्री देवचन्द्र जी का था, लेकिन चर्चा तो उनके अन्दर की बैठी हुई शक्ति ही सुनाती थी। उनके ज्ञान को सुनने के लिए श्री गोवर्धन तथा श्री मेहराज गये और उन्होंने तारतम लिया। अर्थात् श्री देवचन्द्र जी के शिष्य गोवर्धन तथा मेहराज थे। उसके पश्चात् परब्रह्म की शक्ति ने सबके सामने कह दिया कि हम श्री इन्द्रावती जी की आत्मा (मेहराज के तन) में बैठकर परब्रह्म के रूप में जाहिर होंगे। ४० वर्ष की उम्र में मेहराज जी को हब्शे में जाना पड़ा। इसके पहले परब्रह्म अक्षरातीत ने श्री देवचन्द्र जी के तन को छोड़ दिया था। हब्शे में जब विलख-विलख कर श्री इन्द्रावती जी ने जब अपने प्राणनाथ जी को याद किया तो जेल में ही उन्होंने परमधाम के युगल स्वरूप 'श्री राजस्यामा' जी के रूप में अपनी पहचान करायी और सभी भ्रान्तियों को मिटाकर उनके तन से श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के रूप में जाहिर हुए। हब्शे की जेल में तीन किताबें रास, प्रकाश गुजराती तथा खटरुती की किताबें उतरीं। इन किताबों के अवतरण के बारे में कुरान में लिखा है कि अल्लाह तआला जब हब्शे में आयेंगे तो मिश्री की ईंटे गिरेगी। उनको खाने वाले परमधाम चले जायेंगे। बेचारे मुसलमान कहीकत के मायने नहीं समझ सके। परमधाम की अवतरित होने वाली वाणी ही मिश्री की ईंटे हैं, जिनको ग्रहण करने वाला अखण्ड मुक्ति को प्राप्त होता है।

अपनी आत्माओं को धर्म-कर्म के बन्धनों से मुक्त करने के लिये जब श्री जी साहेब निकले तथा मेड़ते में पांचों शक्तियाँ पूर्ण हो गईं तो उन्होंने अपना नाम भी जाहिर कर दिया 'निज नाम श्री जी साहेब जी'

Nijanand App

नेपाली धर्म प्रचारकों ने श्री जी साहेब को हटाकर श्रीकृष्ण को अक्षरातीत बनाया तथा लोगों को भ्रमित करने वाला अपना ज्ञान सुनाकर धन्धा फैलाया तथा लाखों रुपये मारवाड़ी कृष्ण भक्तों से लेकर नेपाल में नौतनधाम जैसे मन्दिर बनाने लगे और हर मन्दिरों में केवल नेपाली पंड़ितों को ही महाराज बनाने लगे। परन्तु श्री निजानन्द सम्प्रदाय की जनता को इनके फन्दों से छुड़ाने के लिए इस ग्रंथ को उन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। यदि उनको कोई शब्द अच्छा न लगे तो क्षमा करने का कष्ट करें। जिस समाज की आचार-संहिता नहीं होती है और सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक अधिकारों का उचित बंटवारा नहीं होता, वह समाज अंधेरे से नहीं निकल पाता। आज के धर्माचार्यों और ट्रस्टी लोग पैसे के बल से कमेटी बना लेते हैं और मनमाने नियम बनाते हैं। वे उसी को महाराज चुनते है, जो उनके इशारों पर चला करते है। अब आप ही सोचें कि जो सच्चे सन्त होंगे, वे माया के भूखे ट्रस्टियों के अधीन नहीं होंगे। लेकिन जिन्हें सच्चिदानन्द परब्रह्म से कोई मतलब ही नहीं है, बल्कि पैसा बटोरना ही जिनके जीवन का उद्‌देश्य है, उन्हें ही ट्रस्टियों की गुलामी स्वीकार होती है। ऐसी स्थिति में सत्य के प्रचार पर ताला लग जाता है और झूठ का फैलाव हो जाता है। इसके गुन्हेगार ट्रस्टी ही हैं।

आजकल के आचार्य जन झूठ बोलने से डरते नहीं हैं किन्तु धर्म ग्रन्थों में झूठ बोलना महापाप कहा गया है। कबीर जी कहते हैं-

सांच बराबर तप नहीं; झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदे सांच है, ताके हिरदे आप।।

इस प्रकार 'नीति' के ग्रन्थों में भी सत्य की महिमा बताई गई है-

नहि सत्यात् परो धर्मः त्रिषु लोकेषु विद्यते।

मिथ्या समं नास्ति पाप तस्मात् सत्य समाचरेत।।

अर्थात् तीनों लोको में सत्य से बढ़कर और कोई भी धर्म नहीं है तथा झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है। इसलिये हमेशा ही सत्य का आचरण करना चाहिए।

जिस सम्प्रदाय के अन्दर वृक्ष पूजा, गंगा पूजा जैसे अन्धविश्वासों को नेपाली धर्म प्रचारकों द्वारा बढ़ावा दिया गया हो, उस सम्प्रदाय के अनुयायियों को विचार-मन्थन करके सत्य की राह पर चलने का प्रयास करना चाहिए। प्रायः सुन्दरसाथ तो यही सोचते हैं कि ट्रस्टी जिसको भी महाराज बना देंगे, हम तो उसी को प्रणाम करेंगे तथा भेंट समर्पित करेंगे। ऐसे अन्धविश्वासी समाज में सत्य का फैलाव कठिन कार्य है। श्री जी साहेब जी के एक साथी ने कहा है कि-

सोच समझ गुरु कीजे रे, साधो भाई सोच समझ गुरु कीजे।

ये तो सौदा परम अमोलक, सों निरखि परखि कर लीजे।।

सब्जी तक खरीदते समय हम सावधानी रखते हैं, लेकिन गुरु, जो हमारे जीवन का खेवट होता है और माया की भंवरों से हमें पार करने वाला होता है, उसका चुनाव हम बिना सोचे-विचारे करते

Nijanand App

हैं। जिन गुरुजनों को यह खुद ही पता नहीं है कि माया क्या है? वे दूसरों का क्या कल्याण करेंगे? वे तो इधर-उधर की कहानियाँ सुनाते हैं और ट्रस्टियों की चाकरी करते हैं। श्री जी साहेब ने गुरु के विषय में कहा है-

महामत कहे गुरु सोई कीजे, जो अलख की देवे लख।
इन उलटी से उलटाए के, पिया प्रेमें करे सनमुख।।

किरंतन ४/१२

ये पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर।
महामत सो गुर कीजिए, जो यों बरसावे नूर।।

किरंतन १४/१२

अर्थात् माया, ब्रह्म, निजधर तथा अपनी आत्मा की पहचान हो जाने पर ही धनी से अपनी निसबत का सुख मिलता है। इसलिये श्री महामति जी कहते हैं कि गुरु उसी को बनाना चाहिए जो इस तरह का ज्ञान देवे।

सत चाहो तो सब्दा चीन्हों, सो आप न देवे दिखायी।
जिन पाया तिन माहें समाया, राखत जोर छिपाई।।

किरंतन ५/८

यदि तुम परब्रह्म को पाना चाहते हो तो सतगुरु के मुख से निकलने वाले शब्दों की पहचान करो। वह सतगुरु जिन्होंने परब्रह्म को पा लिया है, वह ऐसे दिखाई नहीं देते क्योंकि जो भी उस प्रियतम को पाकर उसके आनन्द में डूब जाता है, वह सबसे छिपा ही रहता है।

जिस सच्चिदानन्द अक्षरातीत को आज दिन तक किसी ने भी नहीं जाना वे स्वयं इस २८ वें कलियुग में आ चुके हैं। यदि आप

उस अक्षरातीत श्री जी साहेब की पहचान करना चाहते हैं तो माया के उल्टे कर्म काण्डों को छोड़कर उनसे अपना सम्बन्ध जोड़े। परब्रह्म का यथार्थ ज्ञान देने वाला गुरु ही हमें भवसागर से पार करेगा, भगवे वस्त्र धारण करने वाले नहीं, जिनको परब्रह्म की कुछ भी पहचान नहीं। जिसके अन्दर सत का स्वरूप बैठा होता है, वह कभी भी अपनी झूठी महिमा के चक्कर में नहीं पड़ेगा।

इसलिए इस कलियुग में मनुष्य तन मिलने के कारण आप भाग्यशाली हैं। पूर्ण ब्रह्म श्री जी साहेब अपनी आत्माओं के कारण इस संसार में प्रकट हुए हैं। उन्होंने सभी धर्मों के विरोध को मिटाकर आत्मिक कल्याण का मार्ग 'श्री निजानन्द सम्प्रदाय' दिया है, जिसमें हर मानव का सम्बन्ध सच्चिदानन्द परब्रह्म से जुड़ जाता है। सभी इन्सान कर्म काण्डों एवं देवी देवताओं की पूजा के बन्धनों में फसे पड़े हैं। इनसे बचकर यदि आप सदा-सदा के लिए आनन्द में रहना चाहते हैं तो अक्षरातीत श्री जी साहेब से अपनी आत्मा का सम्बन्ध जोड़ कर मूल ग्रन्थ 'श्री कुलजम स्वरूप साहेब' तथा मूल बीतक साहिब का अध्ययन कर अपना आत्मिक कल्याण करें।

मेरे साथियों ! मैं यह जानता हूँ कि सत्य कुछ कड़वा होता है किन्तु सच्चा और हकीकत का प्यार जानकर तथा अपना समझ कर मैंने कुछ कड़वे शब्दों का प्रयोग किया है। यदि वे आपको अनुचित लगे तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

आपका एक साथी
"धर्मवीर जागनी रत्न"
जगदीश चन्द्र
संरक्षक:- श्री निजानन्द आश्रम रतनपुरी, (उ. प्र.)
एवं
श्री निजानन्द आश्रम बड़ोदरा, (गुजरात)

Nijanand App